॥ श्रीलघुप्रकरणमाला हिन्द्यनुवादसहिता ॥

हिन्द्यनुवादक

अध्यात्म जीतमुनि.

उसके प्रसिद्ध करानेवाले शेठ वाडीलाल पानाचंद-पट्टणनिवासी

तर्फसे

भेट

वीर संवत् २४४४ विक्रम संवत् १९७४ सन १९१८

बडोदा—शियापुरा-लुहाणामित्र स्टीम प्रिन्टिंग प्रेसमें ठक्कर त्रिभुवनभाइ आशारामने प्रसिद्ध कर्ताके लिये

छापक प्रसिद्ध किया ता १-१-१९१९

॥ जीवविचारप्रकरणंमूलहिन्द्यनुवादसहितम् ॥

॥ भुवणपईववीर नमिऊणभणामि अबुहबोहत्थ
जीवसरूव किंचिवि जहभणियपूव्वसूरिहिं ॥ १ ॥

॥ (भुवण) तिन भुवनमें (पईवं) दीपक समान (वीर) वीरप्रभुको (नमिऊण) नमस्कार करके (भणामि) कहता हूं (अबुहबोहत्थ) अज्ञजीवोंको बोध होनेके लिये (जीव) जीवका (सरूव) स्वरूप (किंचिवि) किंचित्मात्र (जह) जेसे (भणिय) कहा हे (पूव्वसूरिहिं) पूर्वके आचार्योंने ॥ १ ॥

॥ जीवामुत्तासंसारिणोय तसथावरायसंसारी
पुढविजलजलणवाऊ वणस्सईथावरानेया ॥ २ ॥

॥ (**जीवा**) जीव (**मुत्ता**) एक-मुक्तिका (**संसारिणो**) दुसरा संसारी (**य**) फिर (**तस**) त्रसजीव (**थावरा**) स्थावर जीव (**य**) और (**संसारी**) संसारीके दो भेद है (**पुढवि**) पृथ्वीकाय (**जल**) अपूकाय (**जलण**) तेउकाय (**वाऊ**) वाउकाय (**वणस्सई**) वनस्पतिकाय (**थावरा**) स्थावरके पाँच भेद (**नेया**) जानना ॥ २ ॥

॥ अत्र दो गाथाओंसे पृथ्वीकायके भेद कहते हैं ॥

॥ फलिहमणिरयणविद्दुम हिंगुलहरियालमणसिलरसिंदा
कणगाइधाउसेढी वन्नियअरणेट्टयपलेवा ॥ ३ ॥

॥ अब्भयतूरीऊसं मट्टीपाहाणजाइओणेगा
सोवीरंजणलूणाई पुढविभेयाइइच्चाई ॥ ४ ॥

॥ (**फलिह**) स्फाटिकरत्न (**मणि**) चंद्रकान्तादि मणीरत्न (**रयण**) रत्न (**विद्दुम**) मूंगीया (**हिंगुल**) हिंगलू (**हरियाल**) हरताल (**मणसिल**) मैनसिल (**रसिंदा**) पारो (**कणगाई**) कनकादि सातों (**धाउ**) धातु (**सेढी**) खडी (**वन्निय**) लालरंगकी मट्टी (**अरणेट्टय**) अरणेट्टय नामे पाषाण (**पलेवा**) पारेवा नामे पाषाण (**अब्भय**) अभरख (**तूरी**)

तेजतुरी (ऊस) क्षार (मट्टी) मिट्टीकी (पाहाण) पाषाणकी (जाईओणेगा) अनेक प्रकारकी जातीओ (सोवीरजण) अंजन करनेका सुरमा (लूणाई) पांच प्रकारके लुण (पुढवि) पृथ्वीकायका (भेयाइ) भेदो (इच्चाई) ईत्यादिक हे ॥ ३–४ ॥

॥ अब एक गाथासे अपकाय जीवोंका भेद कहत है ॥

॥ भोमतरिरखमुदग ओसाहिमकरक हरितणूमहिआ
हुतिघणोदहिमाई भेआणेगायआउस्स ॥ ५ ॥

॥ (भोम) भूमिका (अंतरिख्ख) आकाशका (उदग) जल (ओसा) शामका (हिम) बर्फका (करग) गडाका (हरितणू) हरि वनस्पती पर रहाहुवा (महिया) धुअरका (हुति) हे (घणोदहिमाई) घनोदधिआदि (भेआ) भेदो (अणेगाय) अनेक प्रकारक (आऊस्स) अपूकायका ॥ ५ ॥

॥ अब एक गाथासे अग्निकाय जिवोंका भेदो कहते हे ॥

॥ इंगालजालमुम्मुर उक्कासणिकणगविज्जुमाईया
अगणिजियाणभेयानायव्वानिउणबुद्धीए ॥ ६ ॥

॥ (इंगाल) अगारांकी (जाल) ज्वालाकी (मुम्मुर) वोभरकी (ऊक्का) उल्का-पातकी (असणि) वज्रकी अग्नि (कणग) आकाशमे उडनेवाले अग्निके कणे (विज्जु) विजलीकी (आईया) इत्यादि लेकर (अगणि) अग्निकाय (जियाणं) जिवोंका (भेया) भेदो (नायव्वा) जानना (निउणवुद्धीए) अच्छी बुद्धी करके ॥ ६ ॥

॥ अब एक गाथासे वायुकाय जीवोंके भेद कहते है ॥

॥ उब्भामगउक्कलिया मंडलिमहसुद्धगुंजवायाय
घणतणुवायाईयाभेयाखलुवाउकायस्स ॥ ७ ॥

॥ (ऊब्भामग) उद्भ्रामक वायु उंचा चढने वाला (उक्कलिया) निचे जमीनसे फर्सता चले सो उत्कलिक (मंडलि) विंटोलिया (मह) महावायु (सुद्ध) शुद्ध मंद वायु (गुंजवायाय) गुंजारव करता चलेसो (घण) घनवा (तणु) तनवा (वाया) वायु (आईया) इत्योदिक (भेया) भेदो (खलु) निश्चे (वाउकायस्स) वायुकायका है ॥ ७ ॥

॥ अब एक गाथासे वनस्पतिकाय जीवोंके भेद कहते है ॥

॥ साहारणपत्तेया वणस्सइजीवादुहासुएभणिया
जेसिमणताणतणु एगासाहारणातेऊ ॥ ८ ॥

॥ (साहारण) साधारण (पत्तेया) प्रत्येक (वणस्सइ) वनस्पतिकायक (जीवा) जीवो (दुहा) दो प्रकारके (सुए) सूत्रके विषे (भणिया) कहा है (जेसि) जिसका (अणताण) अनन्त जीवोंका (तणु) शरीर (एगा) एकहो (साहारणा) साधारण (तेऊ) उसको साधारण कहिये ॥ ८ ॥

॥ अब दो गाथाओसे साधारण वनस्पतिकाय जीवोके भेद कहते हे ॥

॥ कंदाअकुरकिसलय पणगासेवालभूमिफोडाय
अल्लयतियगज्जरमोथ्थवथ्थुला थेगपल्लका ॥ ९ ॥

॥ कोमलफलचसव्व गूढसिराइसिणाइपत्ताइ
थोहरिकुआरिगुग्गुलि गलोयपमुहाइछिन्नरुहा ॥ १० ॥

॥ (कंदा) सबजमीकन्द (अंकुर) अंकुरा (किसलय) नयेकोमलपत्ते (पणगा)

पाँच प्रकारकी (**सेवाल**) सेवाल (**भूमिफोडाय**) भूमिफोडा छत्रके आकारे चोमासामें होताहेसो (**अल्लयतिय**) अद्रक, लीली हलदी और कचुरा यह तीन (**गज्जर**) गाजर (**मोथ्थ**) नागरमोथ (**वथ्थुला**) वथुआ (**थेग**) थेगकी भाजी (**पल्लंका**) पालखो (**कोमल**) कोमलहो (**फलं**) फल जीसमें बीज न हो (**च**) और (**सिराइ**) जिसका पुंक आदि प्रगट देखनेमें नहीं आता है ऐसे (**सिणाईपत्ताइं**) सनआदिके पत्ते (**थोहरि**) थूहर (**कुंआरि**) पाग्पाठो (**गुग्गुलि**) गुगलॉनी (**गलोय**) गिलोय (**पमुहाइ**) प्रमुख (**छिन्नरूहा**) छेदकर नावनेसे भी पीछा उग जावै ॥ ११–१२ ॥

॥ अब दो गाथाओंसे अनन्तकायका विशेष लक्षण दीखलाते हैं ॥

॥ इच्चाइणोअणेगे हवंतिभेयाअणंतकायाणं
तेसिंपरिजाणणथ्थं लख्खणमेयंसुएभणियं ॥ ११ ॥
॥ गूढसिरसंधिपव्वं समभंगमहीरुगंचछिन्नरुहं
साहारणंसरीरं तव्विवरीयंचपत्तेयं ॥ १२ ॥

॥ (**इच्चाइणो**) इत्यादिक (**अणेगे**) अनेक (**हवंति**) है (**भेया**) भेदो

(**अणतकायाण**) अनन्तकाय जीवोंके (**तेसिं**) उनके (**परिजाणणथ्थ**) अच्छीतरह जाननेके लिये (**लख्खणमेय**) यह लक्षण (**सुए**) सूत्रके विषे (**भणिय**) कहा है (**गूढ**) गुप्तहो जिसका (**सिर**) फुरुआदि (**संधि**) सांधा (**पव्व**) और गांठा (**समभंग**) जो तोडनेपर समभाग टुटता हो जाव (**अहीरूगच**) जिसमें कोड ततु न हो (**छिन्नरूह**) छेदीने बादनेसे भी उगजाता (**साहारण**) साधारणका (**सरीर**) शरीर हे (**तव्विवरीयंच**) इससे विपरीत लक्षणवाली (**पत्तेय**) प्रत्येक वनस्पतिकाय हे ॥ ११–१२ ॥

॥ अब एक गाथासे प्रत्येक वनस्पतिकायके लक्षण तथा भेद कहते हे ॥

॥ एगसरीरेएगो जीवोजेसितुतेयपत्तेया
फलफूलछल्लिकट्ठा मूलगपत्ताणिवीयाणि ॥ १३ ॥

॥ (**एगसरीरेएगो**) एक शरीमें एक (**जीवो**) जीव (**जेसिं**) जिसमे हो (**तु**) और (**तेय**) उनको (**पत्तेया**) प्रत्येक कहिये (**फल**) फल (**फूल**) फूल (**छल्लि**) छाल (**कट्ठा**) काष्ट (**मूलग**) मूल (**पत्ताणि**) पत्ते (**वीयाणि**) और बीज ऐसे एक वृक्षमें सात ठीकाने जीव होते हे ॥ १३ ॥

॥ अब पृथ्वीकाय आदि जीवोंके विषयमें कुछ विशेष कहते है ॥

॥ पत्तेयंतरुमुत्तंपंचविपुढवाइणोसयललोए

सुहुमाहवंतिनियमा अंतमुहुत्ताउअहिस्सा ॥ १४ ॥

॥ (**पत्तेयंतरु**) प्रत्येक वनस्पतिकायको (**मुत्तं**) छोडकर (**पंचवि**) पाँचोही (**पुढवाइणो**) पृथ्वीकाय आदि लेकर साधारणतक (**सयललोए**) सब लोकके विषे भरी हुइ है (**सुहुमा**) सूक्ष्म (**हवंति**) है (**नियमा**) निश्चे करके (**अंतमुहुत्ताउ**) अन्तर्मुहूर्त आयुवाला (**अहिस्सा**) अदृश्य है (चरमचक्षुसे नही देखा जावे) ॥ १४ ॥

॥ अब दो इंद्रिय जीवोंका भेद कहते है ॥

॥ संखकवड्डुयगंडुल जलोयचंदणगअलसलहगाई

मेहरिकिमिपूयरगावेइंदियमाइवाहाई ॥ १५ ॥

॥ (**संख**) शंखदक्षीणवर्त आदि (**कवड्डुय**) कोडाकोडीयां (**गंडुल**) गंडोला (**जलोय**) जोक (**चंदणग**) चंदनक (**अलस**) अलशीया (**लहगाई**) लालीया जीवो

(**मेहरि**) राटके कीडे (**किमि**) कृमिया (**पूयरगा**) पानीके पुरे (**बेइंदिय**) दो इंद्री जीवों (**माइवाहाई**) चूडेल इत्यादि ॥ १९ ॥

॥ अब दो गाथाओंसे ते इंद्रिय जीवोंके भेद कहेते है ॥

॥ **गोमीमकणजूआ पिपीलिउदेहियायमक्कोडा**
इल्लियघयमिल्लीओ सावयगोकीडजाइआ ॥ १६ ॥
॥ **गद्दहयचोरकीडा गोमयकीडायधन्नकीडाय**
कुंथुगुवालियइलिया तेइंदियइंदगोवाई ॥ १७ ॥

॥ (**गोमी**) कानखजुरा (**मकण**) खटमल (**जूआ**) जउआ तथा जू (**पिपीलि**) चींटीका (**उद्देहिया**) उद्देहिका (**य**) और (**मक्कोडा**) माकोडा (**इल्लिय**) इल्लिका (**घयमिल्लीओ**) जो घीमिलो घृतमें पडति है सो (**सावय**) जो चक्षुम पडति हे सो जू (**गोकीड**) गायके कानमे पडति हे सो (**जाइओ**) इत्यादि प्रकारकी जातियों औरभी (**गद्दहय**) गधैया (**चोरकीडा**) विष्टाके कीडे (**गोमयकीडा**) गोबरके कीडे (**य**) और (**धन्नकीडा**) धान्यके कीडे (**य**) और (**कुंथु**) कथुआ (**गोवालिय**) गोपालिका (**इलिया**) इल्लिका (**तेइंदिय**) तेइंद्री जीवों (**इंदगोवाई**) इंद्रगोप जो वर्षाकालमे होते हे इत्यादि ॥१६-१७॥

॥ अब चउरिंद्रिय जीवोंके भेद कहते है ॥

॥ चउरिंदियायविच्छु ढिंकुणभमरायभमरियातिड्डा-
मच्छियडंसामसगा कंसारीकविलडोलाइ ॥ १८ ॥

॥ (**चउरिंदिया**) चौरिंद्रीवाले (**य**) और (**विच्छु**) विच्छु (**ढिंकुण**) ब्रग (**भमराय**) भमरा (**भमरिया**) भ्रमरिका (**तिड्डा**) तिडी (**मच्छिय**) मख्खी (**डंसा**) डाँस (**मसगा**) मच्छर (**कंसारी**) कंसारी (**कविल**) करोलिया (**डोलाई**) खडमाकडी. ॥ १८ ॥

॥ अब पंचेन्द्री जीव और नारक पंचेन्द्रीका भेद कहते है ॥

॥ पंचिंदियायचउहा नारयतिरियामणुस्सदेवाय
नेरइयासत्तविहा नायव्वापुढविभेएणं ॥ १९ ॥

॥ (**पंचिंदिया**) पंचेंद्री जीवों (**य**) और (**चउहा**) चार प्रकारे (**नारय**) नारक (**तिरिया**) तिर्यंच (**मणुस्स**) मनुष्य (**देवाय**) देवता (**नेरइया**) नारकी (**सत्त-**

विहा) सात प्रकारे (**नायव्वा**) जानना (**पुढवि**) पृथ्वीरत्नप्रभा आदिका (**भेग्गण**) भेदोसे ॥ १९ ॥

॥ अब तिर्यच पचेन्द्री और जलचरतिर्यचका भेद कहते हे ॥

॥ जलयरथलयरखयरा तिविहापचिंदियातिरिख्खाय
सुसुमारमच्छकच्छव गहामगराईजलचारी ॥ २० ॥

॥ (**जलयर**) जलचर (**थलयर**) स्थलचर (**खयरा**) खेचर आकाशमे उडनेवाले (**तिविहा**) एसे तिन प्रकार (**पचिंदियातिरिख्खाय**) तिर्यच पचेंद्री जीवोका है (**सुसुमार**) शिशुमार (**मच्छ**) माछले (**कच्छव**) काछो (**गहा**) जलजतु (**मगराई**) मगरमच्छ आदि (**जलचारी**) जलचरजीव है ॥ २० ॥

॥ अब स्थलचरजीवोंके भेद कहते है ॥

॥ चउपयउरपरिसप्पा भुयपरिसप्पायथलयरातिविहा
गोसप्पनउलपमुहा वोधव्वातेसमासेण ॥ २१ ॥

॥ (चउपय) चार पैरसे चलनेवाले (उरपरिप्पा) छातीसे और पेटसे चलनेवाले उरपरिसर्प (भुयपरिसप्पा) भुजपरिसर्प भुजासे चलनेवाले (य) और (थलयरातिविहा) थलचरके तीन भेद है (गो) गौ (सप्प) साँप (नउल) नौलिया (पमुहा) प्रमुख (बोधव्वा) जानना (ते) वे (समासेणं) संक्षेपसे कहा. ॥ २१ ॥

॥ अब खेचर जीवोंके भेद कहते है ॥

॥ खयरारोमयपख्खी चम्मयपख्खीयपायडाचेव
नरलोगाओबाहिं समुग्गपख्खी वियययपख्खी ॥ २२ ॥

(खयरा) खेचर आकाशमें उडनेवाले पक्षीयो (रोमयपख्खी) रोमकी पांखवाले पक्षी (चम्मयपख्खी) चर्मकी पांखवाले पक्षी (पायडा) प्रगट है (चेव) निश्चे (नरलोगाओ) मनुष्य लोकसें (बाहिं) बाहेर (समुग्गपख्खी) संकोची पांखवाले पक्षी (विययपख्खी) खुली पांखवाले पक्षी ॥ २२ ॥

॥ सव्वेजलथलखयरा समुच्छिमागभ्भयादुहाहुंति–
कम्माकम्मगभूमी अंतरदीवामणुस्साय ॥ २३ ॥

(सव्वे) सब **(जल)** जलचर **(थल)** स्थलचर **(खयरा)** और खेचर **(समु-च्छिमा)** सम्मुर्च्छिम **(गब्भया)** गर्भज **(दुहा)** दो प्रकारके प्रत्येकप्रत्येक **(हुंति)** है ॥ अब उत्तरार्धगाथासें मनुष्यके भेद कहते है **(कम्मा)** करमाभूमीके **(अकम्मगभूमी)** अकरमाभूमिके **(अंतरदीवा)** अतरद्वीपके **(मणुस्साय)** मनुष्य हे ॥ २३ ॥

॥ अब देवोंके भेद कहते है ॥

॥ दसहाभवणाहिवई अठविहावाणवतराहुंति
जोइसियापचविहा दुविहावेमाणियादेवा ॥ २४ ॥

(दसहा) दश प्रकारके **(भवणाहिवई)** भुवनपतीहै **(अठविहा)** आठ प्रकारके **(वाणवतरा)** व्यंतरीक और वाणव्यंतरीक **(हुंति)** है **(जोइसिया)** ज्योतिषी **(पचविहा)** पाच प्रकारके **(दुविहा)** दो प्रकारके **(वेमाणिया)** वेमानीक **(देवा)** देवता है ॥ इस प्रकारे ससारी जीवोंका सक्षेपसें भेद कहा हे ॥ २४ ॥

॥ अब सिद्धाके जीवोका भेद कहते हे ॥

॥ सिद्धापनरसभेया तित्थातित्थाइसिद्धभेएण
एएसखेवेण जीवविगप्पासमख्खाया ॥ २५ ॥

(सिद्धा) सिद्धोंके **(पनरस)** पन्द्रह **(भेया)** भेद है **(तित्थ)** तीर्थंकर सिद्ध **(अतित्थाइ)** अतीर्थंकर आदि **(सिद्धभेएण)** सिद्धोंके भेदोंसें **(एए)** इस प्रकारे **(संखेवेणं)** संक्षेपसें **(जीव)** जीवोंका **(विगप्पा)** भेद **(समक्खाया)** अच्छी तरहसें कह गये ॥ २५ ॥

॥ अब आगे कहना है सो द्वार इस गाथा करके कहते है ॥

॥ एएसिंजीवाणं सरीरमाऊठिईसकायंमि
पाणाजोणिपमाणं जेसिंजंअत्थितंभणिमो ॥ २६ ॥

(एएसिं) इन पुर्वोक्त **(जीवाणं)** जीवोंके **(सरीरं)** शरीर कितना **(आऊ)** आयुप्रमाण कितना **(ठिईसकायंमि)** स्वकायामें रहनेकी स्थिति कितनी **(पाणा)** प्राण कितना **(जोणिपमाणं)** योनिका कितना प्रमाण **(जेसिं)** जिसके **(जं)** जितना **(अत्थि)** है **(तं)** इतना **(भणिमो)** कहुंगा ॥ २६ ॥

शरीरद्वार

॥ इसमें प्रथम एकेंद्रियका शरीर प्रमाण कहते है ॥

॥ अगुलअसखभागो सरीरमेगिंदियाणसवेसिं
जोयणसहस्समहिय नवरपत्तेयरुख्खाण ॥ २७ ॥

(अगुल) अगुलका **(असख)** असख्यातमं **(भागो)** भागे **(सरीरमेगिंदियाणसव्वेसिं)** सब एकेंद्री जीवोंका। (प्रतेक वनस्पतिको छोडकर हे **(जोयणसहस्समहिय)** हजार जोजनसे कुछ अधिक **(नवर)** इतना विशेष **(पत्तेयरुख्खाण)** प्रत्येक वनस्पतिका शरीर जानना ॥ २७ ॥

॥ अब विकलेंद्री जीवोके शरीरका प्रमाण कहते है ॥

॥ वारसजोयणतिन्नेव गाऊआजोयणचअणुकमसो
वेइदियतेइदियचउरिंदियदेहमुच्चत ॥ २८ ॥

(वारसजोयण) बारह जोजनका **(तिन्नेवगाऊआ)** तिन कोशका **(जोयणच)** एक जोजनका **(अणुकमसो)** अनुक्रमसे **(वेइदिय)** दोइंद्री जीवोका **(तेइदिय)** तेइंद्रीका **(चउरिंदिय)** और चोरिंद्री जीवोंका **(देहमुच्चत्त)** शरीरका उचपणा जानना ॥ २८ ॥ ॥१५॥

॥ अब नारक जीवोंके शरीरका प्रमाण कहते है ॥

॥ धणुसयपंचपमाणा नेरइयासत्तमाइपुढवीए
तत्तोअध्धध्धूणा नेयारयणप्पहाजाव ॥ २९ ॥

(**धणु**) धनुष्य (चार हाथको एक) (**सयपंचपमाण**) पांचसोका प्रमाण (**नेरइया**) नारक जीवोंका (**सत्तमाइ**) सातमी (**पुढवीए**) पृथ्वीके (**तत्तो**) उससे (**अद्धधूणा**) आधा आधा कम प्रमाण (**नेया**) जानना (**रयणप्पहाजाव**) यावत् पहिली रत्नप्रभातक ॥ २९ ॥

॥ अब जो तीन प्रकारके गर्भज पंचेन्द्रीतिर्यंच होते है उनके शरीरका प्रमाण कहते है ॥

॥ जोयणसहस्समाणा मच्छाउरगायगभ्भयाहुंति
धणुअपुहुत्तंपक्खीसु भुअचारीगाउअपुहुत्तं ॥ ३० ॥

(**जोयण**) जोजन (**सहस्स**) हजार (**माणा**) प्रमाणका शरीर (**मच्छा**) मच्छका (**उरगा**) और उरपरी सर्पका (**य**) फिर (**गभ्भया**) गर्भजका (**हुंति**) है

(धणुह) धनुष्य **(पुहुत्त)** दोसे लेकर नव तकका **(पक्खीसु)** पक्षीयोका शरीर है **(भुअचारी)** भुजपरी सर्पका **(गाउअ)** कोश **(पुहुत्त)** दोसे लेकर नवतक गर्भजका जानना ॥ ३० ॥

॥ अब सुमुर्च्छिम् पचेंद्री तिर्यंचका देहमान कहते है ॥

॥ खयराधणुअपुहुत्त भुअगाउरगायजोयणपुहुत्त
गाउअपुहुत्तमित्ता समुच्छिमाचउपयाभणिया ॥ ३१ ॥

(खयरा) खेचर पक्षीयोका शरीर **(धणुअपुहुत्त)** दो धनुष्यसे लेकर नव धनुष्य तकका है **(भुअगा)** और भुजपरी सर्पकाभी इतना है **(उरगाय)** उरपरी सर्पका **(जोयण)** जोजन **(पुहुत्त)** दोसे लेकर नवतकका हे **(गाउअ)** कोश **(पुहुत्तमित्ता)** दोसे नवतकका प्रमाण **(समुच्छिमा)** सम्मुर्च्छिम **(चउपया)** चारपैर वाले जीवोका **(भणिया)** कहा है (अढाइ द्वीपके बहार) ॥ ३१ ॥

॥ अब गर्भज चतुष्पद तिर्यंच तथा मनुष्यका शरीरमान कहते है ॥

॥ छच्चेवगाउआइं चउप्पयागब्भयामुणेयव्वा

कोसतिगंचमणुस्सा उक्कोससरीरमाणेणं ॥ ३२ ॥

(**छ**) छ (**च्चेव**) निश्चे (**गाउआइं**) कोशका (**चउप्पया**) चार पैरवाला (**गब्भया**) गर्भजका (**मुणेयव्वा**) जानना (**कोसतिगं**) तीनकोशका (**च**) फिर (**मणुस्सा**) मनुष्योंका (**उक्कोस**) उत्कृष्ट (**सरीर**) शरीरका (**माणेणं**) प्रमाण जानना ॥ ३२ ॥

॥ अब देवोंका स्वाभाविक शरीरमान कहते हैं ॥

॥ ईसाणंतसुराणं रयणीओसत्तहुंतिउच्चत्तं

दुगदुगदुगचउगेविज्जणुत्तरेइक्किक्कपरिहाणी ॥ ३३ ॥

(**ईसाणंत**) भुवनपतिसे लेकर दुसरा इशान देवलोक तक (**सुराणं**) देवताओंके शरीरका प्रमाण (**रयणीओ**) हाथ (**सत्त**) सातका (**हुंति**) है (**उच्चत्तं**) उंचपणे (**दुग**) तीसरा और चोथा देवलोकका एक दुग इसमे देवोंका शरीर छ हाथका हैं (**दुग**) पंचमा और छठा देवलोकका एक दुग इसमें देवोंका शरीर पांच हाथका हैं (**दुग**) सातमा और

आठमा देवलोकका एक दुग इसमें देवोंका शरीर चार हाथका है (**चउ**) एक चतुष्क इसलिये नवमा दशमा ग्यारमा और बारहमा यह चार देवलोकके देवोका शरीर तीन हाथका है (**गेविज्ज**) नव ग्रैवेयक देवोंका शरीर दो हाथका है (**अणुत्तरे**) पाच अनुत्तर विमानके देवोका शरीर एक हाथका है (**इकिकपरिहाणी**) एक एक हाथकी हाणी करणा ॥ २३ ॥

आयुष्यद्वार

॥ इसमें प्रथम एकेंद्रिय जीवोंके आयुका प्रमाण कहते हैं ॥

॥ वावीसापुढवीए सत्तयआउस्सतिन्निवाउस्स
वाससहस्सादसतरु गणाणतेऊतिरित्ताउ ॥ २४ ॥

(**वावीसा**) बावीश हजार वर्षका (**पुढवीए**) पृथ्वीकायके जीवोका आयु हे (**सत्तय**) सात हजार वर्षका (**आउस्स**) अपकायके जीवोंका आयु है (**तिन्नि**) तीन हजार वर्षका (**वाउस्स**) वाउकायके जीवोका आयु है (**वाससहस्सादस**) दश हजार वर्षका (**तरु**) प्रत्येक वनस्पतिका आयु है (**गणाणतेऊ**) अग्निकाय जीवोके समूहका (**ति**) तिन (**रित्ताउ**) अहोरात्रीका आयु कहा है ॥ इसप्रकारे बादर एकेंद्रीका आयुष्य उत्कृष्टा कहा और जघन्यसें अतर्मुहूर्त्तका समज लेना ॥ २४ ॥

॥ अब विकलेंद्री जीवोंके आयुका प्रणाम कहते है ॥

॥ वासाणिबारसाऊ बिइंदियाणंतिइंदियाणंतु
अऊणापन्नदिणाइं चउरिंदीणंतुछम्मासं ॥ ३५ ॥

(**वासाणिबारसाऊ**) बारह वर्षका आयु (**बिइंदियाणं**) दो इन्द्री जीवोंका कहा है (**तिइंदियाणं**) तेइन्द्री जीवोंका (**तु**) फिर (**अऊणापन्नदिणाइं**) गुणपंचास दिनका है (**चउरिंदीणं**) चौरिन्द्री जीवोंका आयु (**तु**) फिर (**छम्मासं**) छ मासका आयु उत्कृष्टा कहा है ॥ ३९ ॥

॥ अत्र पंचेंद्रि जीवोंका आयुप्रमाण कहते है ॥

॥ सुरनेरइयाणठिई उक्कोसासागराणितित्तीसं
चउपयतिरियमणुस्सा तिन्नियपलिओवमाहुंति ॥ ३६ ॥

(**सुर**) देवता (**नेरइयाण**) और नारककी (**ठिई**) आयु स्थिति (**उक्कोसा**) उत्कृष्टी (**सागराणितित्तीसं**) तेतीस सागरोपमकी है (**चउपय**) चार पैरवाले (**तिरिय**) तिर्यंचका (**मणुस्सा**) और मनुष्यका उत्कृष्टा आयु (**तिन्निय**) तीन (**पलिओवमा**) पल्योपमका (**हुंति**) हैं ॥ ३६ ॥

॥ अब गर्भज तिर्यच पंचेंद्रिका आयुष्य कहते हे ॥

॥ जलयरउरभुअगाण परमाऊहोइपुवकोडीओ पख्खीणपुणभणिओ असखभागोयपलियस्स ॥ ३७ ॥

॥ (**जलयर**) जलचर जीवोंका (**उर**) उरपरी सर्पका (**भुअगाणं**) और भुजपरि सर्पका (**परमाऊ**) उत्कृष्ट आयु (**होइ**) होते हे (**पुव्वकोडीओ**) एक पूर्वकोडीवर्षका (**पख्खीण**) पक्षियोंका आयुष्य (**पुण**) फिर (**भणिओ**) कहा है (**असख भागोय-पलियस्स**) पल्योपमके असख्यातमें भागे ॥ ३७ ॥ इस प्रकार जीवोंकी उत्कृष्टी आयु स्थिति कही

॥ अब सुक्ष्म स्थावर और समुर्च्छिम मनुष्यकी आयु स्थीति कहते है ॥

॥ सव्वेसुहुमासाहारणाय समुच्छिमामणुस्साय उक्कोसजहन्नेण अतमुहुत्तचियजियति ॥ ३८ ॥

॥ (**सव्वे**) सब (**सुहुमा**) सुक्षम (**साहारणा**) और साधारण वनस्पतिकाय (**य**) फिर (**समुच्छिमा**) समूर्च्छिम (**मणुस्साय**) मनुष्य (**उक्कोस**) उत्कृष्ट

(जहन्नेणं) और जघन्यसें (अंतमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तमात्र (चिय) निश्चय करके (जियंति) जीता है ॥ ३८ ॥

॥ ओगाहणाउमाणं एवंसंखेवओसमक्खायं
जेपुणइत्थविसेसा विसेससुत्ताउतेनेया ॥ ३९ ॥

॥ (ओगाहणा) शरीरकी अवगाहनाका (आउमाणं) और आयुका प्रमाण (एवं) इस प्रकार (संखेवओ) संक्षेपसे (समक्खायं) अच्छी तरहसें कहा (जे) जो (पुण) फिर (इत्थ) इसमें (विसेसा) विशेप है (विसेससुत्ताउ) विशेप सूत्रोंसें (ते) उनको (नेया) जानना ॥ ३९ ॥

स्वकायस्थितिद्वार

॥ इसमें प्रथम एकेंद्रिकी स्वकाय स्थिति कहते है ॥

॥ एगिंदियायसव्वे असंखउस्सप्पिणीसकायं
उववज्झंतिचयंतिय अणंतकायाअणंताओ ॥ ४० ॥

॥ (एगिदियाय) ऐकेन्द्रि (अनतकायको छोडकर) (सव्वे) और सर्वे (असख) असख्याती (उस्सप्पिणी) उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी कालतक (सकायमि) अपनी कायामें (उववज्झति) उत्पन्न होते हे (चयति) चवते हे (य) और (अणतकाया) अनतकायके जीवों स्वकायामें (अगनाओ) अनती वेर ॥ ४० ॥

॥ अब विकलेंद्रि और पचेंद्रि जीवोकी स्वकाय स्थिति कहते हे ॥

॥ सखिज्झसमाविगला सत्तठभवापणिदितिरिमणुआ उववज्झतिसकाए नारयदेवायनोचेव ॥ ४१ ॥

॥ (सखिज्झसमा) सख्याता वर्ष तक (विगला) विकलेन्द्रीकी स्वकाय स्थिति है (सत्तठभवा) सात आठ भवतक (पणिदितिरि) पचेंद्री तिर्यच (मणुआ) और मनुष्य (उववज्झति) उपजते है (सकाए) अपनी कायामें (नारयदेवाय) नारकी और देवता अपनी कायमें (नो) न उपजे न चव तेसेहि नारक चवके देवता न होवे और देवता चवकर नारक न होवै (चेव) निश्चय करके इस प्रकारे जीवोंकी स्वकाय स्थिति कही ॥ ४१ ॥

॥ अब दो गाथासे सब जीवोंका प्राण कहते है ॥

॥ दसहाजिआणपाणा इंदिऊसासाउजोगबलरूवा
एगिंदिएसुचउरो विगलेसुछसत्तअट्ठेव ॥ ४२ ॥

॥ असन्निसन्नीपंचिंदिएसु नवदसकमेणबोधव्वा
तेहिंसहविप्पओगो जीवाणंभण्णएमरणं ॥ ४३ ॥

॥ (दसहा) दश प्रकारके (जिआण) जीवोंके (पाणा) प्राण है (इंदि) पोंचोइंद्री (ऊसास) स्वासोच्छ्वास (आउ) आयु (जोगबल) मनादि तीन योग बल (रूवा) रूप (एगिंदिएसु) एकेंद्रिको (चउरो) चार प्राण १ फरशइंद्री २ कायबल ३ स्वासोच्छास और आयु ऐसे चार (विगलेसु) विकलेन्द्रिको (छसत्त) छ, सात (अठेव) और आठ अनुक्रमसें जान लेना ॥ ४२ ॥

॥ (असन्नि) असंनी पंचेंद्रीयको (सन्नीपंचिंदिएसु) संनीपंचेन्द्रि जीवोंका प्राण (नव) नव (दस) दश (कमेण) अनुक्रमसें (बोधव्वा) जान लेना (तेहिंसह) उसकी साथसे (विप्पओगा) जो वियोग होना (जीवाणं) जीवोंका (भण्णए) कहते है (मरणं) सो मरण ॥ ४३ ॥ इति प्राणद्वार

॥ अत्र जीवोंके प्राणवियोग रूप मरण कितनी वेर हुए है सो कहते हे ॥

॥ एवअणोरपारेससारे सायरम्मिभीमम्मि
पत्तोअणतखुत्तो जीवेहिअपत्तधम्मेहि ॥ ४४ ॥

॥ (**एव**) इस प्रकारसे (**अणोरपारे**) जिसका पार नही है एसा (**ससारे**) ससाररूपी (**सायरम्मि भीमम्मि**) भयकर समुद्रमें (**पत्तो**) मरण प्राप्त हुआ है (**अणत-खुत्तो**) अनन्तिवेर (**जीवेहि**) जीवों (**अपत्तधम्मेहि**) जिनेश्वर महाराजाके धर्मको नही प्राप्त हुआ ऐसा ॥ ४४ ॥

योनिद्वार

॥ इसमें प्रथम पृथ्वीकाय आदि चार स्थावरकी योनि कहते है ॥

॥ तहचउरासीलरखा सखाजोणीणहोइजीवाण
पुढवाईणचउण्ह पत्तेयसत्तसत्तेव ॥ ४५ ॥

॥ (तह) तेसेही (चउरासीलख्खा) चोरासी लाख (संखाजोणीणहोइ) संख्या योनिकी है (जीवाणं) जीवोंकी (पुढवाईण) पृथ्वीकाय आदि (चउण्हं) चारकी (पत्तेयं) प्रत्येक प्रत्येककी (सत्तसत्तेव) सात सात लाख है ॥ ४५ ॥

॥ अब वनस्पतिकाय, विकलेंद्री जीवों और पंचेन्द्री तिर्यंचकी योनि कहते हैं ॥

॥ दसपत्तेयतरूणं चउदसलख्खाहवंतिइयरेसु
विगलिंदिएसुदोदो चउरोपंचिंदितिरियाणं ॥ ४६ ॥

॥ (दस) दश लाख योनि (पत्तेयतरूणं) प्रत्येक वनस्पतिकी है (चउदसलख्खाहवंति) चौदह लाख है (इयरेसु) इतर साधारणकी (विगलिंदिएसुदोदो) विगलेन्द्रिकी दोदो लाख कही है (चउरोपंचिंदितिरियाणं) और चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रियकी है ॥ ४६ ॥

॥ अब तिर्यंचके विना सब पंचेन्द्री जीवोंकी योनि कहते है ॥

॥ चउरोचउरोनारय सुराणमणुआणचउदसहवंति
संपिंडिआयसव्वे चुलसीलख्खाउजोणीणं ॥ ४७ ॥

॥ **(चउरोचउरो)** चार चार लाख योनि **(नारयसुराण)** नारीकी और देवोंकी है **(मणुआण)** मनुष्यकी **(चउदसहवति)** चौदह लाख योनि है **(सपिडिआयसव्वे)** ऐसे सब इक्ट्ठी मिलानसे **(चुलसीलख्खाउजोणीण)** सब जीवोकी योनिकी सख्या चोरासी लाख है ॥ ४७ ॥ इति ससारी जीवोंका वर्णन समास

॥ अब सिद्ध जीवोके आश्रयी द्वार कहते है ॥

॥ सिद्धाणनत्थीदेहो नआउकम्मनपाणजोणीओ
साइअणंतातेसि ठिईजिणदागमेभणिया ॥ ४८ ॥

॥ **(सिद्धाणनत्थीदेहो)** सिद्ध जीवोको शरीर नही है **(नआउकम्म)** आयु भी नही और कर्म भी नही है **(नपाणजोणीओ)** प्राण भी नही और योनि भी नही है **(साइअणतातेसिं)** उसकी सादि अनत **(ठिई)** स्थिति **(जिणंदागमेभणिया)** जिनेश्वर महाराज के सिद्धातोंमे कही हे ॥ ४८ ॥

॥ अखीरका उपदेश ॥

॥ कालेअणाइनिहणे जोणिगहणम्मिभीसणेइत्थ
भमियाभमिहंतिचिरं जीवा जिणवयणमलहंता ॥ ४९ ॥

॥ (कालेअणाइनिहणे) अनादि अनन्तकालमें (जोणिगहणम्मि) योनियोसे गहन और (भीसणेइत्थ) भयंकर इस संसारमे (भमिया) भ्रमण करचुके (भमिहंति) फिर भ्रमण करेगा (चिरं) बहोत काल तक (जीवा) जीवां (जिणवयणमलहंता) जिनेश्वर महाराजका उपदेशरूपी वचनको नही प्राप्त हुवा ऐसा ॥ ४९ ॥

॥ तासंपइसंपत्ते मणुअत्तेदुल्लहेविसंमत्ते
सिरिसंतिसूरिसिट्ठे करेहभोउज्जमंधम्मे ॥ ५० ॥

॥ (ता) इस वास्ते (संपइसंपत्ते) इस समयपर प्राप्त हुवा (मणुअत्ते) मनुष्य भव (दुल्लहे) महा दुर्लभ है (वि) इसमें भी दुर्लभ (संमत्ते) सम्यकुत्व प्राप्त हुवा है (सिरि) ज्ञान रूपी लक्ष्मीका धरणेवाले (संतिसूरि) इस जीवविचारका वनानेवाला शांतिसूरि महाराज कहते है (सिठे) श्रेष्ठ पुरुषोने कहा हुआ (करेहभो) हे भव्य प्राणियो करलो (उज्जमं) उद्यम (धम्मे) धर्मके विषे ॥ ५० ॥

॥ एसोजीववियारोसखेवरुईण जाणणाहेउ
सखित्तोउद्धरिओ रुद्दाओसुयसमुद्दाओ ॥ ५१ ॥

॥ (एसो) इसप्रकारसें (जीव) जीवोंका (वियारो) विचार (संखेवरुईण) सक्षेप रुचीवाले जीवोंको (जाणणाहेऊ) जाननेके लिये (सखित्तो) सक्षेप मात्र (उद्धरिओ) उद्धार किया हे (रुद्दाओसुयसमुद्दाओ) वहोत विस्तार वाले सूत्ररूप समुद्रसें ॥ ५१ ॥

इति श्रीमन्महायोगीन्द्र आनन्दघन महाराजचरणोपासक अध्यात्मजितमुनि-
विरचित हिन्द्यनुवादसहित जीवविचारप्रकरण समाप्तम्

॥ अथ नवतत्त्वप्रकरण प्रारंभः ॥

॥ जीवाऽजीवापुण्णं पावाऽसवसंवरोयनिज्जरणा
बंधोमुक्खोयतहा नवतत्ताहुंतिनायव्वा ॥ १ ॥

॥ (**जीवा**) जीव, द्रव्य और भावप्राणको धारण करनेवाले (**अजीवा**) ज्ञान—चेतनासें रहित सो अजीव (**पुण्णं**) शुभ फलका जो भोगना वह पुण्य (**पावा**) अशुभ फलको जो भोगना वह पाप (**आसव**) जो शुभाशुभ कर्मका आना वह आश्रव कहलाते है (**संवरो**) जो शुभाशुभ कर्मको रोकना वह संवर कहलाते है । (**य**) और (**निज्जरणा**) जो आत्मध्यानसें शुभाशुभ दोनुं कर्मको वालके भस्मीभूत करके सर्वथा नही लेकीन देससें उडादेना वह निर्जरातत्त्व (**बंधो**) जो शुभाशुभ कर्मका खीरनिरकी तरह आत्मप्रदेशकी साथ बंधहोना वह बंधतत्त्व (**मुक्खो**) सर्वथा कर्मोसें जो मुक्त होना सो मोक्षतत्त्व (**य**) फिर (**तहा**) तेसे (**नव**) नव (**तत्ता**) तत्त्व याने रहस्य (**हुंति**) है (**नायव्वा**) जानने योग्य ॥ १ ॥

॥ चउदसचउदसबायालीसा बासीयहुतिबायाला

सत्तावन्नबारस चउनवभेयाकमेणेसिं ॥ २ ॥

॥ **(चउदस)** जीवका चौदह भेद **(चउदस)** अजीवका भी चौदह भेद **(बायालीसा)** पुण्यके बयालीस भेद **(बासीय)** पापके व्यासी भेद **(हुति)** है **(बायाला)** आश्रवके बयालीस भेद हे **(सत्तावन्न)** संवरके सत्तावन भेद **(बारस)** निर्जराके बारह भेद **(चउ)** बंधके चार भेद **(नव)** और मोक्षका नव **(भेया)** भेद है **(कमेणेसि)** अनुक्रमसें नवे तत्वका सब मिलकर २७६ भेद हे ॥ २ ॥

॥ अब जीवकी छे जाति कहते हे ॥

॥ एगविहदुविहतिविहा चउविहापचछविहाजीवा

चेयणतसइयरेहिवेयगई करणकाएहिं ॥ ३ ॥ ॥३१॥

॥ **(एगविह)** चेतना लक्षणसें सब जीवो एक प्रकारे है **(दुविह)** त्रस और स्थावरपणेसे जीवोंके दो भेदहै **(तिविहा)** स्त्रीवेद पुरुषवेद और नपुंसकवेदसें जीवोंके तिन भेद है **(चउव्विहा)**

देव मनुष्य तिर्यंच और नारक इसप्रकारसें जीव चार तरहका **(पंच)** एकेन्द्रि आदिसें जीव पाँच तरहका **(छव्विहा)** पृथ्वी आदि लेकर छे तरहका **(जीया)** जीव है **(चेयण)** ज्ञानादि चेतना सहित **(तस)** त्रस हलते चलते सो **(इयरेहिं)** इतर स्थिर रहे सो स्थावर **(वेय)** तीन वेद **(गई)** चार गति **(करण)** इंद्री पाँच **(काएहिं)** काया छ ॥ ३ ॥

॥ अब प्रथम जीवका चौदह भेद कहते है ॥

॥ एगिंदियसुहुमियरा सन्नियरपणिंदियायसबितिचउ अपजत्तापज्जत्ता कमेणचउदसाजियठाणा ॥ ४ ॥

॥ **(एगिंदिय)** एकेन्द्रि जीवोंके दो भेद है **(सुहुमियरा)** एक सूक्ष्म और दुसरा बादर **(सन्नि)** मन सहित **(इयर)** दुसरा असंनि मन रहित ऐसे **(पणिंदियाय)** पंचेन्द्रिके दो भेद है **(स)** उस पूर्वका चारकी साथ **(बि)** दो इंद्रीका एक भेद **(ति)** तेइंद्रीका एक भेद **(चउ)** चौरींद्रीका एक भेद यह तिन मिलानेसें सात हुवा **(अपजत्तापज्जत्ता)** वह सात अपर्याप्ता और दुसरा सात पर्याप्ता **(कमेणचउदस)** अनुक्रमसें ऐसे सब मिलकर चौदह **(जिय)** जीवोंका **(ठाणा)** स्थान है ॥ ४ ॥

॥ अब जीवका लक्षण कहते है ॥

॥ नाणचदसणचेव चरित्तचतवोतहा
वीरियंउवओगोय एयंजीवस्सलख्खण ॥ ५ ॥

॥ (नाण) ज्ञान आठ प्रकारे पाँच सम्यक्त्व आसरे और तीन अज्ञान मिथ्यात्व आसरे (च) और (दसण) दर्शनका चार भेद (चेव) निश्चे (चरित्त) चारीत्रका पाँच भेद सामायक आदि निश्चय व्यवहार (च) फिर (तवो) तपका बारह भेद (तहा) तेसेही (वीरिय) वीर्य दो प्रकारके (उवओगो) उपयोगके बारह भेद (य) और (एय) ये (जीवस्स) जीवका (लख्खण) लक्षण हे ॥ ५ ॥

॥ अब जीवोंकी पर्याप्ती कहते हे ॥

॥ आहारसरीरइंदिय पज्जत्तीआणपाणभासमणे
चउपचपचछप्पिय इगविगलासन्निसन्नीण ॥ ६ ॥ ॥३३॥

॥ (आहार) आहारपर्याप्ति १ (सरीर) शरीरपर्याप्ति २ (इंदिय) इंद्रियपर्याप्ति

३ (**पज्जत्ती**) ऐसे तिन पर्याप्ति (**आणपाण**) स्वासोस्वास ४ (**भास**) भाषा ५ (**मणे**) मनपर्याप्ति ६ (**चउ**) आहारादि चार (**पंच**) मन छोडकर पाँच (**छप्पिय**) मन सहित संपूर्ण छे पर्याप्ति (**एग**) एक इंद्रीको चार (**विगला**) बिगलेंद्रीको मन छोडकर पॉच (**असन्नि**), असंनी पंचेन्द्रिको मन छोडके पांच (**सन्नीणं**) संनी पंचेन्द्रिको छे है ॥ ६ ॥ अब जो इस अपनी अपनी पर्याप्ति पूरी करके मरे सो जीव पर्याप्ता और बीना पुरी कीए मरे सो जीव अपर्याप्ता कहलाता है ॥

॥ अब जीवोंका प्राण कहते हैं ॥

॥ पणिंदियत्तिबलूसा–साऊदसपाणचउछसगअट्ठ
इगदुतिचउरिंदीणं असन्निसन्नीणनवदसय ॥ ७ ॥

॥ (**पणिंदिय**) पाँच इंद्रीयों (**त्तिबल**) मनादि तीन बल (**ऊसास**) स्वासोस्वास (**आऊ**) आयु (**दस**) ऐसे दस (**पाण**) प्राण है (**चउ**) स्पर्शनेंद्रिय कायबल स्वासोस्वास और आयु ऐसे चार (**छ**) पूर्वका चारकी साथ रसना और वचन ऐसे छे (**सग**) पूर्वका छेकी साथ नासीका ऐसे सात, (**अट्ठ**) आठ प्राण, पूर्वका सातकी साथ चक्षु (**इग**) एकेंद्रिको पूर्वका चार (**दु**) दो इंद्रीको पूर्वका छे (**ति**) ते इंद्रिको पूर्वका सात (**चउरिंदीणं**)

चौरिंद्रीको पूर्वका आठ **(असन्नि)** असनी पँचेंद्रिको **(सन्नीण)** और सनी पँचेन्द्रिको **(नवदसय)** अनुक्रमसें नव और दश प्राण जान लेना जेसेकी पूर्वका आठकी साथ श्रोत मिलानेसें नव और नवकी साथ मन मिलानेसें दश । चार भावप्राण तो सबकाही समान है ॥ ७ ॥ इति जीवतत्त्वम् ॥

॥ अब अजीव तत्त्वका चौदह भेद कहते है ॥

॥ धम्माऽधम्माऽगासा तियतियभेयातहेवअद्धाय
खधादेसपएसा परमाणुअजीवचउदसहा ॥ ८ ॥

॥ **(धम्मा)** धर्मास्तिकाय **(अधम्मा)** अधर्मास्तिकाय **(आगासा)** और आकाशास्तिकाय **(तियतिय)** प्रत्येक प्रत्येकका खधादि तीन तीन **(भेया)** भेद है ऐसे नव **(तहेव)** तेसेही **(अद्धाय)** कालका एक भेद इस प्रकारसे पूर्वका नव और कालका १ सब मिलकर दश हुआ सो अरूपी है **(खधा)** और खध **(देस)** देश **(पएसा)** प्रदेश **(परमाणु)** परमाणु यह चार पुद्गलका रूपी कहा **(अजीव)** रूपी अरूपी दोनु मिलकर अजीवका **(चउदसहा)** चौदह भेद है ॥ ८ ॥

॥ अत्र अजीव तत्त्वका विशेष स्वरूप देखलाते है ॥

॥ धम्माऽधम्मापुग्गल नहकालोपंचहुंतिअजीवा
चलणसहावोधम्मो थिरसंठाणोअहम्मोय ॥ ९ ॥

॥ (**धम्माऽधम्मा**) धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय (**पुग्गल**) पुद्गलास्तिकाय (**नह**) आकाशास्तिकाय (**कालो**) और काल (**पंच**) यह पांच (**हुंति**) है (**अजीवा**) अजीव द्रव्य (**चलणसहावो**) चलन स्वभाव गुणवाला (**धम्मो**) धर्मास्तिकाय है (**थिर-संठाणो**) और स्थिरस्वभावगुण वाला (**अहम्मोय**) एक अधर्मास्तिकायमें है ॥ ९ ॥

॥ अवगाहोआगासं पुग्गलजीवाणपुग्गलाचउहा
खंधादेसपएसा परमाणुचेवनायव्वा ॥ १० ॥

॥ (**अवगाहो**) अवकाश स्वभावगुणवाला (**आगासं**) आकाशास्तिकायमें है, वह (**पुग्गल**) पुद्गलको (**जीवाण**) और जीवको अवकाश देता है (**पुग्गला**) पुद्गलके (**चउहा**) चार भेद है (**खंधा**) खंध (**देस**) देश (**पएसा**) प्रदेश (**परमाणु**) और परमणु ऐसे (**चेव**) निश्चे (**नायव्वा**) जानना ॥ १० ॥

॥ सद्दधयारउज्जोय पभाछायातवेहिआ
वण्णगधरसाफासा पुग्गलाणतुलख्खण ॥ ११ ॥

॥ (**सद्दं**) जीव शद्बादि तिन (**अधयार**) अवकार (**उज्जोय**) प्रकाश (**पभा**) ज्योति (**छाया**) छाया (**तवेहिआ**) सूर्य आदिकी आतापना (**वण्ण**) पाँचोही वर्ण (**गध**) दोनु गन्ध (**रसा**) पाँचरस (**फासा**) आठ स्पर्श (**पुग्गलाणतु**) पुद्गलका ऐसे (**लख्खण**) लक्षण हे ॥ ११ ॥

॥ अब कालद्रव्यका स्वरूप कहते है ॥

॥ एगाकोडिसतसठ्ठि लख्खासत्तहुत्तरीसहस्साय
दोयसयासोलहिया आवलियाइगमुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥

॥ (**एगाकोडि**) एक क्रोड (**सतसठ्ठिलख्खा**) सडसठ लाख (**सत्तहुत्तरी-सहस्साय**) सित्तोतर हजार (**दोयसयासोलहिया**) दोसोसे कुछ सोलह अधिक (**आव-लिया**) १६७७७२१६ अवलिका (**इग**) एक (**मुहुत्तम्मि**) मूहूर्तके विषे होती है ॥१२॥

॥ समयावलीमुहुत्तं दीहापख्खायमासवरिसाय
भणिओपलिआसागर उस्सप्पिणीसप्पिणीकालो ॥ १२ ॥

॥ **(समय)** समय, अतिसुक्ष्म कालको समय कहते है ऐसे असंख्य समयकी **(आवली)** एक आवलिका होती है **(मुहुत्तं)** मुहूरतकालका प्रमाण आवलीकी संख्यासें पूर्वकी वारवी गाथासें जाणलेना **(दीहा)** ऐसे तीस मुहूर्तका एक अहोरात्री दिन **(पख्खा)** ऐसे पंद्रह दिनका एक पक्ष **(य)** और **(मास)** ऐसे दो पक्षका एक मास **(वरिसा)** ऐसे बारह मासका एक वर्ष **(य)** और **(भणिओ)** कहा है **(पलिआ)** ऐसे असंख्य वर्षका एक पल्योपम, ऐसे दश कोडाकोडी पल्योपमका **(सागर)** एक सागरोपम, ऐसे दश कोडाकोडी सागरोपममिलनेसे एक **(उस्सप्पिणी)** उत्सर्पिणी और ऐसे दश कोडाकोडी सागरोमकी एक **(सप्पिणी)** अवसर्पिणी होती है **(कालो)** ऐसे उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी मिलकर एक काल चक्र और ऐसे अनंते काल चक्र जानेपर एक पुद्गल परावरतन होते है । ऐसा अनंता पुद्गल परावरतन होचुके और आगे होवेंगे इति कालद्रव्यका मान कहा ॥ १२ ॥

॥ अब द्रव्यका स्वरूप इग्यारे बोलसे देखलाते है ॥

॥ परिणामिजीवमुत्त सपएसाएगखित्तकिरिआय
णिच्चकारणकत्ता सव्वगयइयरअप्पवेसे ॥ १४ ॥

॥ (परिणामि) छ द्रव्यम परीणामी कितना और अपरीणामी कितना निश्चयनयसें तो छेही द्रव्य अपरीणामी है और व्यवहारनयम तो एक जीव दुसरा पुद्गल यह दो परीणामी बाकीके चार अपरीणामी हे १ (जीव) यह छ द्रव्यमें एक जीवद्रव्य चेतन हे शेप पाँच द्रव्य अजीव अचैतन्य है २ (मुत्त) यह छे द्रव्यम एक पुद्गल जो हे वह मुर्त्तिमत हे बाकीके पाँच द्रव्य अमुर्त्त अरूपी है (सपएसा) यह छे द्रव्यम पाँच प्रदेशी हे और एक कालद्रव्य अप्रदेशी है (एग) यह छे द्रव्यमें धर्म अधर्म और आकाश ये तीन द्रव्य एक है शेप तीन अनेक हे (खित्त) यह छ द्रव्यमें एक आकाश द्रव्य जो है वह क्षेत्र हे शेप पाँच क्षेत्री है (किरिआय) इस छे द्रव्यमें जीव और पुद्गल यह दो द्रव्य सक्रिय है शेप चार द्रव्य अक्रिय है (णिच्च) ये छे द्रव्यमें व्यवहारसें तो धर्म अधर्म आकाश और काल यह चार नित्य हे बाकीके दो द्रव्य अनित्य है और निश्चयसें छेही द्रव्य नित्य हे (कारण) जीवको छोडकर पाँच द्रव्य कारण है और जीवद्रव्य अकारण हे (कत्ता) ये छे द्रव्यमें जीव तथा पुद्गल व्यवहारसें कर्त्ता बाकीके चार अकर्ता (सव्वगय) ये छ द्रव्यमें एक आकाशद्रव्य लोकालोक व्यापक है और बाकीके पाँच द्रव्य लोक व्यापी हे (इयर) इतर (अप्पवेसे) कोई द्रव्य कोईसें मिले नही ॥ १४ ॥ इति अजीवतत्त्वम् ॥

॥ अब पुण्य तत्वके बयालिस भेद कहते है ॥

॥ साउच्चगोअमणुदुग सुरदुगपंचिंदिजाइपणदेहा
आइतितणुवंगा आइमसंघयणसंठाणा ॥ १५ ॥

॥ (सा) शाता वेदनी कर्म १ (उच्चगोअ) उंच गोत्र कर्म २ (मणुदुग) मनुष्यगति ३ और मनुष्यानुपूर्वी ४ (सुरदुग) देवगति ५ और देवानुपूर्वी ६ (पंचिंदिजाइ) पंचेन्द्रि जातीनाम कर्म ७ (पणदेहा) औदारीकादि शरीर पाँच १२ (आइतितणु) आदिके तीन शरीरका (णुवंगा) अंगोपांग १५ (आइमसंघयणसंठाणा) आदि वज्ररुषभनाराच संघयण १६ और प्रथम संस्थान समचोरस १७ ॥ १५ ॥

॥ वण्णचउक्कागुरुलहु परघाऊसासआयवुज्जोयं
सुभखगइनिमिणतसदस सुरनरतिरियाउतित्थयरं ॥१६॥

॥ (वण्णचउक्का) शुभवर्णादिचार २१ (अगुरुलहु) अगुरुलघु २२ (परघा) पराघातनाम कर्म २३ (ऊसास) शुभ स्वासोस्वास नामकर्म २४ (आयव) आतापना नामकर्म

२५ (उज्जोयं) उद्योतनामकर्म २६ (सुभखगइ) शुभ विहायोगति जिस कर्मके उदयसें जीवकी हससमान चाली हो २७ (निमिण) निर्माण नामकर्म २८ (तसदस) त्रस दशक ३८ इस दशकेका भेद आगेकी गाथासें कहेंगे (सुर) देवआयु नामकर्म ३९ (नर) मनुष्यआयु नामकर्म ४० (तिरियाउ) तिर्यचआयु नामकर्म ४१ (तित्थयर) और तीर्थकरनामकर्म ४२

॥ अब त्रसका दसका कहते है ॥

॥ तसबायरपज्जत्तं पत्तेयथिरसुभचसुभगच
सुस्सरआइज्जजस तसाइदसगइमहोइ ॥ १७ ॥

॥ (तस) त्रसनामकर्म १ (बायर) बादरनामकर्म २ (पज्जत्त) पर्यासनामकर्म एक लब्धि पर्याप्ता दुजाकरणपर्याप्ता ऐसे दो भेद ३ (पत्तेय) प्रत्येकनामकर्म ४ (थिर) स्थिरनामकर्म ५ (सुभ) शुभनामकर्म ६ (च) और (सुभग) सौभाग्यनामकर्म ७ (च) और (सुस्सर) सुस्वरनामकर्म जिसका स्वर कोकिलाकी तरह मधुर हो ८ (आइज्जा) आदेयनामकर्म ९ (जस) यशकीर्तिनामकर्म १० (तसाइ) त्रस आदिक (दसग) दशक (इमहोइ) इस प्रकारसें है ॥ १७ ॥ इतिपुण्यतत्त्वम् ॥

॥ अब पाप तत्त्वके बयासी भेद कहते है ॥

॥ नाणंतरायदसगं नवबीयेनीयसायमिच्छत्तं
थावरदसनरयतिगं कसायपणवीसतिरियदुगं ॥ १८ ॥

॥ (**नाण**) पाँच ज्ञानावरणी मतिज्ञानावरणी १ श्रुतज्ञानावरणी २ अवधिज्ञानावरणी ३ मनःपर्यवज्ञानावरणी ४ और केवल ज्ञानावरणी ऐसे पाँच (**अंतराय**) अन्तराय दानान्तराय १ लाभान्तराय २ भोगान्तराय ३ उपभोगान्तराय ४ और वीर्यान्तराय यह पांच अन्तराय (**दसगं**) ऐसे दश भेद कहे (**नवबीये**) और नव दुसरा दर्शनावरणी कर्मके निंद्रा १ निंद्रानिंद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४ थिणद्धी ५ चक्षुदर्शनावरणी ६ अचक्षुदर्शनावरणी ७ अवधीदर्शनावरणी ८ और केवलदर्शनावरणी ९ ऐसे नव और पूर्वकादशामिलकर ओगुणीस (**नीय**) निचगोत्र २० (**असाय**) असातावेदनीकर्म २१ (**मिच्छत्तं**) मिथ्यात्व मोहनीनामकर्म २२ (**थावर**) स्थावरको (**दस**) दशको इश दशकेका भेद आगे कहेंगे ३२ (**नरयतिगं**) नरकत्रिक नरकगती नरकानुपूर्वी और नरक आयु ऐसे तीन ३५ (**कसायपणवीस**) कशाय पचीस सो देखलाते है अनन्तानुबंधी आदि क्रोधके चार तथा अनन्तानुबंधि आदि मानके चार फिर अनन्तानुबंधि आदि मायाके चार और अनन्तानुबंधी आदि लोभके चार यह सोल कषाय अब नवनो कशाय कहते हैं हास्य १ रति २

अगति ३ शोक ४ भय ६ दुगछा ६ स्त्रीवेद ७ पुरुषवेद ८ नपुसकवेद ९ पूर्वके सोल कषाय और यह नव नोकषाय सब मील २५ तथा पूर्वके ३६ सब मिल साइठ (तिरियदुग) और तिर्यंचद्विक इस लिये तिर्यंचगति ६१ और तिर्यंचानुपूर्वी ६२ ॥ १८ ॥

॥ इगवितिचउजाईओ कुखगइउवघायहुतिपावस्स
अपसत्थवण्णचउ अपढमसघयणसठाणा॥ १९ ॥

॥ (इग) एकेन्द्रिजाति (वि) दोइन्द्रिजाति (ति) तेरिन्द्रीजाति (चउ) और चोरिन्द्रिजाति (जाईओ) ऐसे चार जाति नामकर्म यह सब मिल्के छासठ (कुखगइ) अशुभ विहायोगति नामकर्म इस नामकर्मसें जीव गधेकी नाइ चले सो ६७ (उवघाय) उपघात नामकर्म ६८ (हुतिपावस्स) यह सब पापके भेद है (अपसत्थवण्णचउ) अशुभ वर्णादि चार ७२ (अपढमसघयणसठाणा) प्रथमका सघयनको छोडकर ऋषभनाराच १ नाराच २ अर्धनाराच ३ कीलीका ४ और सेवठा यह पाच सघेयन और प्रथमका सस्थान छोडकर न्यग्रोध १ सादि २ कुब्ज ३ वामन ४ और हुडक यह पाच सस्थान सब मिलकर पापतत्वका व्यासी भेद हुआ॥ १९ ॥ ॥४३॥

॥ अब स्थावरका दशका कहते है ॥

॥ थावरसुहुमअपज्जं साहारणमथिर मसुभदुभगाणि
दुस्सरणाइज्जजसं थावरदसगंविवज्जत्थं ॥ २० ॥

॥ (**थावर**) स्थावर नामकर्म १ (**सुहुम**) सुक्ष्म नामकर्म २ (**अपज्जं**) अजर्याप्ति नामकर्म ३ (**साहारणं**) साधारण नामकर्म ४ (**अथिरं**) अस्थिर नामकर्म ५ (**असुभ**) अशुभ नामकर्म ६ (**दुभग्गाणि**) दुर्भाग्य नामकर्म ७ (**दुस्सर**) दुःस्वर नामकर्म जो गधेकी तरह मुंकना ८ (**अणाइज्ज**) अनादेय नामकर्म ९ (**अजसं**) अपयश नामकर्म १० (**थावरदसगंविवज्जत्थं**) यह स्थावरको दशको त्रससे विप्परित जान लेना ॥२०॥ इतिपापतत्वम्

॥ अब आश्रव तत्त्वके बयालीस भेद देखलाते हैं ॥

॥ इंदिअकसायअव्वय जोगापंचचउपंचतिन्नीकमा
किरिआओपणवीसं इमाउताओअणुक्कमसो ॥ २१ ॥

॥ अब पुद्गलका लक्षण कहते है ॥

॥ (**इंदिअ**) इन्द्रियो पांच (**कसाय**) क्रोधादि कषाय चार (**अव्वय**) प्राणा तीपातादि अव्रत पाँच (**जोगा**) मनादि योग तीन (**पंच**) पाँच (**चउ**) चार (**पंच**) पाँच (**तिन्नी**) तीन (**कमा**) अनुक्रमसे जान लेना (**किरिआओपणवीस**) क्रिया पचीश (**इमाउताओअणुकमसो**) यह पचीस क्रियाको अनुक्रमसे कहते है ॥ २१ ॥

॥ काइयअहिगरणीआ पाउसिआपारितावणीकिरिया पाणाइवायारभिअ परिग्गहियामायवत्तीय ॥ २२ ॥

॥ (**काइय**) कायाको अजतनासें वरतावनासो कायिकि क्रिया १ (**अहिगरणीआ**) जिस क्रियासें जीव नरकादिकका अधिकारि हो उसको अधिकरणिकी क्रिया कहते है जैसे कि शस्त्रआदिसें जीवोंकी हत्या करना (**पाउसिआ**) जीव अजीवसें जो द्वेष करना वह प्राद्वेषिकी क्रिया ३ (**पारितावणीकिरिया**) अपनें जीवको या दुसरा जीवोको तकलीफ पहुचाना वह पारितापनिकी क्रिया ४ (**पाणाइवाय**) जो किशी जीवको प्राणोंसे रहित करना वह प्राणातिपातिकी क्रिया ५ (**आरभिअ**) जो खेति आदि आरंभका काम करना सो आरंभिकी क्रिया ६ (**परिग्गहिया**) जो परिग्रह रखना या परिग्रहे पर ममत्त्व रखना सो परिग्रहिकी क्रिया ७ (**मायवत्तीअ**) जो माया-कपटसें किशीको ठगना सो मायाप्रत्ययिकी क्रिया ८ ॥ २२ ॥

॥ मिच्छादंसणवत्ती अपच्चक्खाणायदिठ्ठिपुठ्ठिअ
पाडुच्चिअसामंतो--वणीअनेसत्थिसाहत्थि ॥ २३ ॥

॥ (**मिच्छादंसणवत्ती**) जिनेद्रके सिद्धांतसे जो विपरीत एकान्तक्रियारुची आत्मज्ञानसे हिन वहिरात्मा सम्यक् हिन और दृष्टीरागी जिसको सत्यासत्यका निरणे नहीं सो मिथ्या दर्शनकी क्रिया ९ (**अपच्चक्खाणाय**) व्रतपचखान नही करनेसें जो क्रिया लगती है वह अप्रत्याख्यानिकी क्रिया १० (**दिठ्ठि**) जो अशुभ दृष्टीसें देखना सो दृष्टीकी क्रिया ११ (**पुठ्ठिअ**) जो रागादिसें कलुपितचित्ते स्त्री आदिके अंगका स्पर्श करना सो स्पृष्टीकी क्रिया १२ (**पाडुच्चिअ**) जो अपने मनसे स्वपरका बुरा विचारना सो १३ (**सामंतोवणीअ**) अपना अश्व प्रमुखकी प्रशंसासें हर्ष करना सो अथवा दुध दही घी आदिके भाजन खुलां रखनेसें उसमें जो त्रस आदि जीव पडकर मरे उससें लगे सो सामंतोपनिपातीकी क्रिया १४ (**नेसत्थि**) नैसृष्टिकी क्रिया १५ (**साहत्थि**) स्वहस्तिकी क्रिया १६ ॥ २३ ॥

॥ आणवणिविआरणिआ अणभोगाअणवकंखपच्चइआ
अन्नापओगसमुदा--णपिज्जदोसेरिआवहिआ ॥ २४ ॥

॥ (**आणवणि**) जो जीव अजीवको लाने लेजानेसें क्रिया लगे उसको आनयनिकी क्रिया कहते हे १७ (**विआरणिआ**) जो जीव अजीवको विदानेसें विदारणि लगेसो क्रिया १८ (**अणभोगा**) अना उपयोगम जो चीज रकम उठाना रखना तथा हल्ने चल्नेसें जो क्रिया लगे उसे अनाभोगीकी क्रिया कहत है १९ (**अणवकखपच्चइआ**) इस लोक तथा परलोकसें जो विरुद्ध आचरण करना उसे अनाकांक्षाप्रत्ययीकी क्रिया कहते है २० (**अन्नापओग**) दुसरी प्रायोगिकी क्रिया २१ (**समुदाण**) समुदायकी क्रिया २२ (**पिज्ज**) माया और लोभ करनेसें जो क्रिया लगे उसे प्रेमीकी क्रिया कहते है २३ (**दोसे**) क्रोध और मानमें जो क्रिया लगे उसे द्वेषीकी क्रिया कहते हे २४ (**इरिआवहिआ**) रस्ते चलनेसें शरीरके व्यापारसें जो क्रिया लगे उसे इर्यापथिकीकी क्रिया कहते है २५ सो क्रिया अप्रमत्त साधु तथा सयोगी केवलीको भी लगति हें ॥ २४ ॥ इति आश्रवतत्वम् ॥

॥ अत्र सवरका सत्तावन भेद कहते है ॥

॥ समिईगुत्तिपरीसह जइधम्मोभावणाचरित्ताणि
पणतिदुवीसदसवारस्स पचभेएहिसगवन्ना ॥ २५ ॥ ॥४७॥

॥ (**समिइ**) सुमति (**गुत्ति**) गुप्ति (**परीसह**) परिसह (**जइधम्मो**) यतिधर्म

(**भावणा**) भावना (**चरित्ताणि**) चारित्र (**पण**) समिति पांच (**ति**) गुप्तितीन (**दुवीस**) परिसह बावीश (**दस**) दशविध यति धर्म (**बारस**) बारह भावना (**पंच**) चारित्र पॉच (**भेएहिं**) ऐसे सब मिलके संवरके भेद (**सगवन्ना**) सत्तावन कहै जिसमें दो भेद है एक द्रव्यसंवर और दुसरा भावसंवर नवीन कर्मको रोक देना जो आते हुये आत्मस्वरुपमे रहकर उसको भाव संवर कहते है और कर्म पुद्गलकी रुटवटको द्रव्यसंवर कहते हैं ॥ २५ ॥

॥ अब संवरके सत्तावन भेद विस्तारसें कहते है ॥

॥ इरियाभासेसणादाण उच्चारेसमिईसुअ
मणगुत्तिवयगुत्तिकायगुत्तितहेवय ॥ २६ ॥

॥ (**इरिया**) यत्तनापूर्वक रस्तेमें चलना उसको ईर्यासमिति कहते है १ (**भासे**) निर्दोष भाषाका जो बोलना उसे भाषासमिति कहते है २ (**सणा**) निर्दोष आहारको जो ग्रहण करना सो एषणासमिति ३ (**दाणे**) दृष्टिसे और पुजनीसे प्रमार्जन करके चीजको उठाना और रखना उसको आदेननिक्षेपसमिति कहते है ४ (**उच्चारे**) कफ मल मुत्र आदिको जतनापूर्वक परठना उसे पारिष्ठापनिकाय कहते है (**समिई**) पांचसमिति (**सुअ**) यह ५ (**मणगुत्ति**) और मनोगुप्तिके तीन भेद है असत्कल्पनावियोग समताभावकी और आत्मविचार ६ (**वयगुत्ति**)

वचनगुप्तिजिसके दो भेद हे अशुद्ध मिश्र और शुद्ध व्यवहार ७ (**कायगुत्तितहेवय**) कायगुप्ति अशुभ करणीसे कायाको गोपरखना ८ ॥ २६ ॥

॥ अत्र बाइस परिसहोंको कहते है ॥

॥ खुहापिवासासीउण्ह दसाचेलारइत्थिओ चरिआनिसिहियासिज्जा अक्कोसवहजायणा ॥ २७ ॥

॥ **(खुहा)** क्षुधापरिसह १ **(पिवासा)** प्यासको सहन करना वह पिपासा परिसह २ **(सी)** शीत परिसह ३ **(उण्ह)** उष्ण परिसह ४ **(दसा)** डश परिसह ५ **(चेला)** अचेलक परिसह ६ **(अरइ)** अरति परिसह ७ **(त्थिओ)** स्त्रीके अगउपाँगको सराग दृष्टिसें न देखे सो स्त्री परिसह ८ **(चरिआ)** चलनेका परिसह ९ **(निसिहिया)** नेपेधिकी इस लिये स्मशान और सिंहकी गुफा आदि स्थानोमें ध्यानके समय नाना प्रकारके कष्टको सहता हुवा भी निषिद्ध न करे सो १० **(सिज्जा)** सथारेकी भूमी कदाही उची निची मिलजानेपरभी मुनि उद्वेग न करे सो सय्या परिसह ११ **(अक्कोस)** आक्रोश इस लिये कोइ गाली देवे तोभी सहन करे १२ **(वह)** वध इस लिये कोई दुष्ट जीव मुनिको मारे पींटे या जानसें मारडाले तो भी वीतरागी साधु क्रोध न करे १३ **(जायणा)** याचना परिसह १४ ॥ २७ ॥

॥ अलाभरोगतणफासा मलसक्कारपरीसहा
पन्नाअन्नाणसम्मत्तं इअबावीसपरीसहा ॥ २८ ॥

॥ **(अलाभ)** लाभान्तराय कर्मके उदयसें जो मागने परभी चीज न मिले तोभी समता रखे और विचारे कि अन्तराय कर्मका उदय है सो अलाभ परिसह १५ **(रोग)** ज्वरादि अति रोग आने परभी साधु चिकीत्सा करानेकी इच्छाभी न करे किन्तु संभावसे सहन करे सो रोग परिसह १६ **(तणफासा)** तृण स्पर्श परिसह साधुको तृण आदिको जो संथारो मिले तोभी शांत चित्तसें वेदना सहन करे १७ **(मल)** मलपरिसह इस लिये शरीरपर जो पसीनेसें मेल चढ जावे तोभी स्नानादिकी इच्छा न करे १८ **(सक्कारपरीसहा)** सत्कारपरिसह, उत्कर्षमें न आवे, स्तुति करणेपर समचित्त रखे १९ **(पन्ना)** प्रज्ञा इस लिये बडी विद्वता होनेपरभी मुनि घमण्ड न रखे २० **(अन्नाण)** अज्ञान परिसह अज्ञानके उदयसें मुनि दुर्ध्यान न करे २१ **(सम्मत्तं)** सम्यक्त्वपरिसह **(इअ)** इस प्रकारसें **(बावीसपरीसहा)** बावीशपरिसह जाणना २२ ॥ २८ ॥

॥ अब इसगाथासें दश प्रकारे यति धर्म कहते है ॥

॥ खंतीमद्दवअज्जव मुत्तीतवसंजमेअबोधव्वे
सच्चंसोअंआकिंचणंच बंभंचजइधम्मो ॥ २९ ॥

॥ (खती) क्षमा सत्र प्राणीमात्रपर सम दृष्टी रखे किन्तु यति कोइपर क्रोध न रखे १ (मद्दव) मानका त्याग करना उसको मार्दव धर्म कहते है २ (अज्जव) किशीके साथ कपट नहि रखना सो आर्जव धर्म ३ (मुत्ती) निरलोभता ४ (तव) तप जो इच्छाका निरोध करना वही तप ५ (सजमे) सत्तरे प्रकारे सयमका आराधन करना वही समय ६ (अ) और (बोधव्वे) जानना (सच्च) सत्यधर्म ७ (सोअ) मन आदिको पवित्र रखना वह शौच धर्म ८ (आकिंचण) बाह्य अभ्यन्तर परीग्रहका त्याग सो अकिंचन धर्म ९ (च) और (बभ) द्रव्यसे और भावसे जो मैथुनका त्याग करना वह ब्रह्मचर्य धर्म १० (जइधम्मो) ऐसे दश प्रकारे यति धर्म पाले उसको यति कहना योग्य है इससे जो विपरित हो वह यति नही समजना कुयति समजना ॥२९॥

॥ अत्र बारह भावना कहते है ॥

॥ पढममणिच्चमसरण ससारोएगयायअन्नत्त
असुइत्तआसवसवरोअ तहनिज्जरानवमी ॥ ३० ॥

॥ (पढममणिच्च) प्रथम अनित्यभावना इस भावनामें भव्यजीव ऐसा विचारे कि धन यौवन आदि सत्र पदार्थ अनित्य है आत्माका मूल धर्म अविनाशी है १ (असरणं) अशरण भावना कि मृत्युके समय इस जीवको ससारमें धर्म बिन कोई भी शरणभूत नही है एक धर्मही शरण हे ऐसा

विचारना सो २ **(संसारो)** संसारभावना इस भावनामें भव्य ऐसा विचारे कि मेरे जीवनें चौरासी लख योनिमें परिभ्रमण करते अनन्तेकाल चक्र हो गये है इस संसारमें पिता सो पुत्र और पुत्र सो पिता ऐसा उलट सुलट अनंती वेर होते है ऐसा विचारना सो संसार भावना ३ **(एगयाय)** एकत्व भावना इस भावनामें भव्य ऐसा चिंतवे कि मेरा जीव अकेलाही आये है और अकेलाही जावेंगे सुखदुःख भी अकेलाही भोगेंगे ४ **(अन्नत्तं)** अन्यत्त्व भावना इसमें भव्य ऐसा विचारे कि मेरा आत्मा अनन्त ज्ञानमयी है और शरीर जड पदार्थ है शरीर आत्मा नहीं है न आत्मा शरीर है ऐसा सदैव विचारे ५ **(असुइत्तं)** अशुचि भावना यह शरीर खून मॉस हड्डी मलमूत्र आदिसें भराहुआऐसा जो विचारना वह अशुचित्त्व भावना ६ **(आसव)** आस्रव भावना रागद्वेष और अज्ञान मिथ्यात्व आदिके जोरसें नये नये कर्मका जो आना अर्थात् शुभाशुभका विचार वह आस्रव ७ **(संवरोअ)** संवर भावना शुभाशुभ विचारको छोडकर स्वसरूपमें लीन रहना अर्थात् नवीन कर्मको आने नहीं देना वह निश्चय संवर और अकेला अशुभ विचारोंको :रोकदेना सो व्यवहार संवर भावना ८ **(तह)** तेसेही **(निज्जरानवमी)** नवमी निर्जरा भावना निर्जराके दो भेद है एक सकाम निर्जरा और दुसरी अकाम निर्जरा ९ ॥ ३० ॥

॥ लोगसहावोबोही दुल्लहाधम्मस्ससाहगाअरिहा
एआओभावणाओ भावेअव्वापयत्तेणं ॥ ३१ ॥

॥ (**लोगसहावो**) दशमी लोकस्वरूप भावना इसमें चौदह राजलोकका स्वरूप विचारना (**बोहीदुल्लहा**) ११ मी सम्यक्त्वकी प्राप्ति होनी बहोत दुर्लभ है ऐसा विचारना वह बोधि दुर्लभ भावना (**धम्मस्स**) बारहवीं धर्म भावना इसम भव्य ऐसा विचारे कि ससारसमुद्रसें पार होनेके लिये जो जिनेश्वर महाराजने कहा हुआ धर्म है उसका(**साहगाअरिहा**) साधक अरिहतादि मिलना दुर्लभ है (**एआओ**) इस प्रकारसें कही हुई (**भावणाओ**) भावनाओ (**भावेअव्वा**) विचारनी (**पयत्तेण**) प्रयत्नसें ॥ ३१ ॥

॥ अत्र चारित्रके पाँच भेद कहते है ॥

॥ सामाइअत्थपढमं छेओवठ्ठावणभवेबीअ
परिहारविसुद्धय सुहुमतहसपरायच ॥ ३२ ॥

॥ (**सामाइ**) सामायिक चारित्रद्रव्य और भावसें (**अत्थ**) इथर (**पढम**) पहिले हे १ (**छेओवठ्ठवणभवेवीअं**) छेदोपस्थापनीयचारित्र दुसरा हे २ (**परिहारविसुद्धीयं**) परिहार-विशुद्धि चारित्र ३ (**सुहुमतहसपरायच**) फिर चोथा सुक्ष्मसपराय चारित्र ४ यह चारित्र दशमा गुणस्थानवाले मुनिको होते हो ॥ ३२ ॥ ॥५३॥

॥ तत्तोअअहक्खायं खायंसव्वम्मिजीवलोगम्मि
जंचरिऊणसुविहिआ वच्चंतिअयरामरंठाणं ॥ ३३ ॥

॥ (तत्तोअअहक्खायं) उस पीछे पाँचमा यथाख्यात चारित्र (खायंसव्वम्मिजीवलोगम्मि) यह चारित्र सब जीव लोगमें प्रसिद्ध है (जंचरिऊणसुविहिआ) जिसका सेवन करनेसें साधु लोगों (वच्चंतिअयरामरंठाणं) अजरामरस्थानकको पाते है ॥ ३३ ॥ इति संवर तत्त्वम् ॥

॥ अब निर्जरा तत्त्वके बारह भेद कहते है ॥

॥ अणसणमूणोअरिआ वित्तीसंखेवणंरसच्चाओ
कायकिलेसोसंलीण–यायबज्झोतवोहोइ ॥ ३४ ॥

॥ (अणसणं) सर्वथा आहारका त्याग सो अनशन तप १ (ऊणोअरिआ) आहार कम करना सो ऊनोदरी तप २ (वित्तीसंखेवणं) वृत्तिका संक्षेप करना सो वृत्तिसंक्षेप तप ३ (रसच्चाओ) विगयका त्याग करना सो रस त्याग तप ४ (कायकिलेसो) लोचादि जो कष्ट करना वह कायाकलेश तप ५ (संलीणयाय) सब इन्द्रियोंका दमन करना वह संलीनता तप (बज्झोतवोहोइ) इस प्रकारसें बाह्य तपके छे भेद कहै ॥ ३४ ॥

॥ पायच्छित्तविणओ वेयावच्चतहेवसज्झाओ
झाणउस्सग्गोविअ अभ्भितरओतवोहोइ ॥ ३५ ॥

॥ (पायच्छित्त) जो शुद्ध मनसें गुरु महाराजके पास आलोयणा लेना सो प्रायश्चित तप १ (विणओ) विनय तप २ (वेयावच्च) वेयावृत्य तप ३ (तहेवसज्झाओ) तैसेही स्वाध्याय तप ४ (झाण) ध्यान तप ध्यानका स्वरूप गुरुगमसें धारना ५ (उस्सग्गोविअ) और उत्सर्ग तप ६ (अभ्भितरओतवोहोइ) ऐसे छे प्रकारसें अभ्यंतर तप कहे ॥ ३५ ॥

॥ बारसविहतवोनिज्जराय बधोचउविगप्पोअ
पयईठिइअणुभागो पएसभेएहिनायव्वो ॥ ३६ ॥

॥ (बारसविह) ऐसे सब मिलकर बारह भेदे (तवो) तप (निज्झराय) निर्जराके लिये है । इति निर्जरातत्त्वम् (बधो) अब बंधतत्त्व (चउविगप्पोअ) चार भेदे है (पयई) १ प्रकृतिबंध (ठिइ) स्थितिबंध (अणुभागो) ३ अनुभाग बंध (पएस) और प्रदेशबंध ४ (भेएहिं) ऐसे चार भेदसें (नायव्वो) जानना ॥ ३६ ॥ ॥५८॥

॥ अब बंधतत्त्वका विशेष स्वरूप देखलाते है ॥

॥ पयइसहावोवुत्तो ठिईकालावहारणं
अणुभागोरसोनेओ पएसोदलसंचओ ॥ ३७ ॥

॥ (पयइसहावोवुत्तो) प्रकृतिबन्ध इसलिये कर्मोका स्वभाव (ठिईकालावहारणं) कर्मोकी स्थिति—कालका निश्चय वह स्थितिबन्ध २ (अणुभागो) ३ अनुभाग बन्ध सो (रसोनेओ) कर्मोका रस जानना (पएसो) ४ प्रदेशबन्ध (दलसंचओ) कर्मोके दलका संचय ॥ ३७ ॥

॥ पडपडिहारसिमज्ज हडचित्तकुलालभंडगारीणं
जहएएसिंभावा कम्माणविज्जाणतहभावा ॥ ३८ ॥

॥ (पड) पाटा, जैसे किसीके आंखेपर बन्धे हुए पाटेके संयोगसें कुछ नहीं देखाए देते तेसे ही ज्ञानावरणीय कर्मके स्वभावसें आत्माके अनन्त ज्ञान नहीं दिखलाते है १ (पडिहार) द्वारपालकेसमान दर्शनावरणीय कर्मको स्वभाव है जैसे राजाको दर्शन चाहनेवालेको द्वारपाल रोक देते है उसी तरह आत्माके दर्शनगुणको दर्शनावरणीय कर्म रोक देते है २ (असि) तरवार, वेदनी कर्मका स्वभाव ऐसा है कि जैसे सक्कर खरडी तलवारकी धारको चाटनेसें अच्छा लगता है मगर जब जीभ कटा-जाति है तब दुख होते है वैसीही तरह शातावेदनीसें जीवको सुख होता है और अशातावेदनीसें

जीवको दुख होता है ३ (मज्ज) मदिराकीछाक समान मोहनीयकर्मका स्वभाव हे जैसे मदिरासें जीव वेभान होजाते हे तसेही मोहनीयकर्मके उयदसें जीव ससारम मुझाते है यह कर्म आत्माका सम्यगूज्ञानको और सम्यक् चारित्र गुणोको रोकते है अर्थात ढक दते है ४ (हड) खोडासमान आयुकर्म है जेसे खोडेमें पडे हुए चोर राजाके हुक्म बिन नही निकल शगते है तैसे ही आयुकर्मके जोरसे जीव गतीसे नही निकल शगते है ५ (चित्त) इस नामकर्मका स्वभाव चित्रकार जैसा हे यह कर्म आत्माके अरूपि धर्मको रोकते है जैसे चित्तारा अच्छा बुरा नाना प्रकारका चित्रामन वनाते है तेसे ही यह नामकर्म आत्माको अछीबुरी गतियोंमे पहुचा दते हे नाना प्रकारके स्वरुपको धारण करा देते है ६ (कुलाल) यह गोत्रकर्म कुभार जैसा हे जेसे कुभार अछे ओर बुरे नाना प्रकारके वरतन बनाते हे तेसेही इस कर्मके उदयस जीव ऊच निच कुलको धारण करते हे ७ (भडगारीण) इस अतराय कर्मका स्वभाव भडारी जैसा हे क्योंकि जब राजा किसीको दान देनेके लिये भडारीको कहे परन्तु भन्डारी उसको दव नही ऐसेही इस कर्मके उदयसें जीव दानादि नही कर शकते है ८ (जहएएसि-भावा) जैसा यह आठोही वस्तुका स्वभाव है (कम्माण) तैसेही आठोही कर्मोकाभी (विज्जाण) विदमान हे (तहभावा) तैसेही स्वभाव ॥ ३८ ॥

॥ अब कर्मोकी मूल तथा उत्तर प्रकृती कहते है ॥

॥ इहनाणदंसणावरण वेयमोहाउनामगोआणि
विग्घंचपणनवदु अठवीसचउतिसयदुपणविहं ॥ ३९ ॥

॥ (**इहनाण**) यह ज्ञानावरणीयकर्म १ (**दंसणावरण**) और दुसरा दर्शनावरणीकर्म २ (**वेयमोहाउनामगोआणि**) तीसरा वेदनीयकर्म ३ ४ मोहीनीकर्म ५ आयुकर्म ६ नामकर्म और सातमा गोत्रकर्म ७ (**विग्घं**) अन्तरायकर्म ८ (**च**) यह आठ कर्म (**पण**) ज्ञाना-वरणीयकी उत्तर प्रकृतियों पाँच है (**नव**) और दर्शनावरणीयकी उत्तरप्रकृति नव (**दु**) वेदनीकी प्रकृति दो (**अठवीस**) मोहीनीकर्मकी उत्तर प्रकृति अठ्ठावीस (**चउ**) आयुकर्मकी उत्तर प्रकृति चार (**तिसय**) नामकर्मकी उत्तर प्रकृति एकसो तीन (**दु**) गोत्रकर्मकी उत्तर प्रकति दो (**पण**) और अन्तराय कर्मकी उत्तर प्रकृति पांच (**विहं**) ऐसे सव कर्मोकीउत्तर प्रकृति एकसें अठ्ठावन जान लेना ॥ ३९ ॥

॥ अव आठोहि कर्मोकी उत्कृष्टी स्थितिका वन्ध कहते है ॥

॥ नांणेयदंसणावरण वेअणिएचेवंअंतराएअ
तीसं कोडाकोडी अयराणंठिईयउक्कोसा ॥ ४० ॥

॥ (नाणेयदसणावरणवेअणिए) ज्ञानावरणी दर्शनावरणी वेदनी (चेव) निश्चय (अतराए्अ) और अन्तराय इन चारो कर्मकी (तीसकोडाकोडी) तीस कोडाकोडी (अयराण) सागरोपमकी (ठिईयउक्कोसा) उत्कृष्टी स्थिति कही है ॥ ४० ॥

॥ सत्तरिकोडाकोडीमोहणिए वीसनामगोएसु
तित्तीसअयराइ आउठिइबधउक्कोसा ॥ ४१ ॥

(सत्तरिकोडाकोडी) सित्तर कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति (मोहणिए) मोहनीय कर्मकी है (वीसनामगोएसु) वीस कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति नामकर्म और गोत्रकर्मकी है (तित्तीसअयराइ) तेतीस सागरोपमकी (आउ) आयुकर्मकी (ठिइ) स्थिति कही (बधउक्कोसा) ऐसे सब कर्मोकी उत्कृष्टी स्थितिका बध कहा है ॥ ४१ ॥

॥ बारसमुहुत्तजहन्ना वेयणिएअठनामगोएसु
सेसाणतमुहुत्त एयबधठिईमाण ॥ ४२ ॥

॥ अब आठोही कर्मोकी जघन्यस्थिति कहते है ॥

॥ (**बारसमुहुत्तजहन्ना**)-बारह मुहूर्त्तकी जघन्यस्थिति (**वेयणिए**) वेदनीयकर्मकी हैं (**अठनामगोएसु**) आठ मुहूर्त्तकी जघन्यस्थिति नामकर्म और गोत्रकर्मकी हैं (**सेसाणंतमुहुत्तं**) शेष पाँच कर्मोंकी जघन्यस्थिति अन्तर मुहूर्तकी है (**एयंबंधठिईमाणं**) इस प्रकासे सब कर्मोंकी उत्कृष्टी और जघन्यसे स्थिति बंधका प्रमाण कहा ॥ ४२ ॥ इति बंधतत्वम् ॥

॥ अब अठारे गाथायोंसे नवमा मोक्षतत्त्वका नव भेद और सिद्धोंके पन्द्रह भेद देखलाते है ॥

॥ संतपयपरूवणया दव्वपमाणंचखित्तफुसणाय
कालोअअंतरभाग भावेअप्पाबहुचेव ॥ ४३ ॥

॥ (**संतपयपरूवणया**) सत्पदकी प्ररूपणाद्वार १ (**दव्वपमाणं**) फिर सिद्धजीवोंके द्रव्यका प्रमाणद्वार २ (**खित**) क्षेत्र द्वार ३ (**फुसणाय**) सिद्धोंकी स्पर्शनाद्वार ४ (**कालोअ**) कालद्वार ५ (**अंतर**) अन्तरद्वार ६ (**भाग**) भागद्वार ७ (**भाव**) भावद्वार ८ (**अप्पाबहु**) और अल्प बहुत्वद्वार ९ (**चेव**) निश्चे यह मोक्षके नव द्वार कहे ॥ ४३ ॥

॥ प्रथम सत्पद प्ररूपणाद्वार स्वरूप देखलाते हैं ॥

॥ संतंसुद्धपयत्ता विज्जंतंखकुसुमव्वनअसंतं
मुक्खत्तिपयंतस्सओ परूवणामग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥

॥ (मत) मोक्ष मत्य है (सुद्ध) शुद्ध (पयत्ता) पद (विज्जत्तखकुसुम-
व्वनअसत्त) यह विद्यमान है परन्तु वह आकाशके कुसुमकी तरह असत्य नही है (मुक्ख-
त्तिपयतस्सओ) यह मोक्षपदकी (परूवणा) प्ररूपणा (मग्गणाईहि) मार्गणाद्वारको
विचारमे कहते है ॥ ४४ ॥

॥ गइइंदीएकाये जोएवेएकसायनाणेय
सजमदसणलेसा भवसम्मे सन्नि आहारे ॥ ४५ ॥

(गइ) गतिमार्गणा १ (इंदीए) इन्द्रिमार्गणा (काय) कायमार्गणा ३ (जोए) योगमार्गणा ४ (वेए) वेदमार्गणा ५ (कसाय) कषायमार्गणा ६ (नाणेय) ज्ञानमार्गणा ७ (संजम) संजममार्गणा ८ (दसण) दर्शनमार्गणा ९ (लेसा) लेश्यामार्गणा १० (भव) भव्यमार्गणा ११ (सम्मे) सम्यक्त्वमार्गणा १२ (सन्नि) सन्निमार्गणा १३ (आहारे) आहारमार्गणा १४ ॥ ४५ ॥

॥ अब निचेकी गाथासे जीव कितनी मार्गणामें मोक्ष जाते है सो देखलाते है ॥ ॥६१॥

॥ नरगइपणिंदितसभव सन्निअहक्खायखइअसम्मत्ते
मुक्खोणाहारकेवल दंसणनाणेनसेसेसु ॥ ४६ ॥

॥ (**नरगइ**) मनुष्यगतिसें १ (**पणिंदि**) पंचेन्द्रिसें २ (**तस**) त्रसकायसें ३ (**भव**) भव्यपणसें ४ (**सन्नि**) संनीपंचेन्द्रिसे ५ (**अहक्खायं**) यथाख्यातचारीत्रसें ६ (**खइअसम्मत्ते**) क्षायकसम्यक्त्वसें ७ (**मुक्खो**) मोक्ष जाते हैं और (**णाहार**) अणहारीक पदसें ८ (**केवलदंसण**) केवल दर्शनसें ९ (**नाणे**) और केवलज्ञानसें इन दश मार्गणा द्वारसे जीवों मोक्ष जाते है १० (**नसेसेसु**) परन्तु शेष मार्गणाओंसें मोक्ष नही जाते ॥ ४६ ॥

॥ इति प्रथमद्वार ॥

॥ अब द्रव्यप्रमाण और क्षेत्रद्वार कहते है ॥

॥ दव्वपमाणेसिद्धाणं जीवदव्वाणिहुंतिणंताणि
लोगस्सअसंखिज्झे भागेइक्कोयसव्वेवि ॥ ४७ ॥

॥ (**दव्वपमाणेसिद्धाणं**) सिद्धोके द्रव्यकाप्रमाण (**जीवदव्वाणिहुतिणंताणि**) सिद्धोमें जीवद्रव्य अनंता है ॥ इति दुसरा द्वार २ (**लोगस्सअसंखिज्जेभागे**) चौदह राजलोकके असंख्यातमे भागमे (**इक्कोय**) एक सिद्ध और (**सव्वेवि**) सब सिद्ध रहते है ॥ इति तीसरा द्वार ३ ॥ ४७ ॥

॥ फूसणाअहिआकालो इगसिद्धपडुचसाइओणतो
पडिवायाभावाओ सिद्धाणअतरनत्थि ॥ ४८ ॥

॥ (**फूसणा**) स्पर्शना सिद्ध जीवोंकी (**अहिआ**) अधिक है यह चौथा द्वार ४ (**कालो**) काल (**इगसिद्धपडुचसाइओणतो**) एक सिद्ध आश्रित सादि अनन्त स्थिति है और अनेक सिद्ध आश्रीत अनादि अनन्त स्थिति है ॥ इति कालद्वार ५ (**पडिवायाभावाओ**) सिद्धाके जीवोंको पिछा पडनेका अभाव हे ॥ इति छठा द्वार ६ (**सिद्धाणअतरनत्थि**) सिद्धोंके जीवोंको अन्तर नही हैं कालकृत और क्षत्रकृत दोनोंसे इति सातमा द्वार ॥ ४८ ॥

॥ अब भागद्वार कहते है ॥

॥ सव्वजियाणमणते भागेतेतेसिदसणनाण
खइएभावेपरिणामि एअपुणहोइजीवत्त ॥ ४९ ॥

॥ (**सव्वजियाणमणते**) सव ससारी जीवोंसे सिद्धके जीवों अनन्तमे (**भागे**) भागे हैं इति आठमो द्वार ८ (**तेतेसिदसणनाण**) उन सिद्धोंके जीवोंको केवलदर्शन और

केवलज्ञान (खइए) क्षायिक (भाव) भावे है (परिणामी) परिणामी हैं (एअपुण) यह पुनः (होइजीवत्तं) जीवत्वपना हे ॥ ४९ ॥

॥ अब अल्प बहुत्वद्वार कहते हैं ॥

॥ थोवानपुंससिद्धा थीनरसिद्धाकमेणसंखगुणा
इअमुक्खतत्तमेअं नवत्तत्तालेसओभणिआ ॥ ५० ॥

॥ (थोवा) सबसे कम (नपुंस) नपुंसक (सिद्धा) सिद्ध हुवा (थी) नपुंसकसे स्त्रीसिद्ध संख्यातगुणीं अधीक हैं स्त्री सिद्धसे (नरसिद्धा) पुरुष सिद्ध संख्यातगुणे सिद्ध हुए (कमेणसंखगुणा) अनुक्रमे संख्यातगुणा जानना (इअमुक्ख) यह मोक्षके (तत्तमेअं) तत्त्व इस प्रकारसें नव भेद कहे (नवतत्तालेसओभणिआ) इस प्रकारे नव तत्त्व संक्षेपसे कहे गये ॥ ५० ॥

॥ ज़ीवाइनवपयत्थे जोजाणइतस्सहोइसम्मत्तं
भावेणसद्दहंतो अयाणमाणेविसम्मत्तं ॥ ५१ ॥

॥ (**जीवाइ**) जीवादि लेकर (**नवपयत्थे**) नव पदार्थको (**जोजाणइ**) जो जीव जाणते हे (**तस्सहोइसम्मत्त**) उस जीवको अवश्यही सम्यक् हो (**भावेणसद्दत्तो**) और भावसें जो सद है तो (**आयाणमाणेवि**) अजान जीवोको भी (**सम्मत्तं**) सम्यक् प्राप्ति हो ॥ ५१ ॥

॥ सवाइजिणेसरभासिआइ वयणाईनन्नहाहुति
इअबुद्धीजस्समणे सम्मत्तनिच्चलतस्स ॥ ५२ ॥

॥ (**स-वाइ**) सब प्रकारसें (**जिणेसरभासिआइ**) जिनेश्वर महाराजके कहे हुए (**वयणाइं**) वचन (**नन्नहाहुति**) अन्यथा नही हे लेकीन सत्य है (**एअबुद्धीजस्समणे**) ऐसी बुद्धि जिसको हो (**सम्मत्तनिचलतस्स**) उस प्राणीको निश्चय सम्यक् हो ॥ ५२ ॥

॥ अतोमुहुत्तमित्तपि फासिअहुज्जजेहिसम्मत्त
तेसिअवड्ढपुग्गल परिअट्टोचेवससारो ॥ ५३ ॥

॥ (**अतोमुहुत्तमित्तपि**) एक अन्तर मुहुर्त्त मात्रभी (**फासिअहुज्जजेहि**) स्पर्श

हुआ हो जिसको (**सम्मत्तं**) सम्यक् (**तेसिं**) तिस जीवको (**अवड्ढ**) अर्ध (**पुग्गल-परिअट्टो**) पुद्गल परावर्त्ततक उसको परिभ्रमण करना होगा (**चेव**) निश्चकरके (**संसारो**) संसारमें बाद मोक्षमे जावेंगे ॥ ५३ ॥

॥ उस्सप्पिणीअणंतापुग्गलपरिअट्टओ मुणेअव्वो
तेणंतातीअद्धाअणागयद्धाअणंतगुणा ॥ ५४ ॥

॥ (**उस्सप्पिणीअणंता**) अनन्ती उत्सर्पिणी और अनन्ती अवसर्पिणी जाने पर (**पुग्गलपरिअट्टओमुणेअव्वो**) एक पुद्गल परावर्त्तन होते है (**तेणंतातीअद्धा**) तेसा अनन्ता पुद्गल परावर्त्तन अतितकाले हो चुके (**अणागयद्धाअणंतगुणा**) और अनागतकाले अनन्तगुणा आगे जावेंगे ॥ ५४ ॥

॥ अब सिद्धोंके पन्द्रह भेद कहते है ॥

॥ जिणअजिणतित्थतित्था गिहिअन्नसलिंगथीनरनपुंसा
पत्तेअसयंबुद्धा बुद्धबोहिक्कणिकाय ॥ ५५ ॥

॥ (जिण) जिनसिद्ध १ (अजिण) अजिनसिद्ध २ (तित्थ) तीर्थसिद्ध ३ (तित्था) अतिर्थसिद्ध ४ (गिहि) गृहीलिंगेसिद्ध ५ (अन्न) अन्यलिंगेसिद्ध ६ (स-लिंग) स्वलिंगेसिद्ध ७ (थी) स्त्रीलिंगेसिद्ध ८ (नर) पु पलिंगेसिद्ध ९ (नपुसा) नपुमकलिंगे सिद्ध १० (पत्तेअ) प्रत्येक बुद्धसिद्ध ११ (सयबुद्धा) स्वयबुद्धसिद १२ (बुद्धवोहि) बुद्धबोधिसिद्ध १३ (कणिक्काय) एकसिद्ध १४ और अनेकसिद्ध १५ यह सिद्धके पन्द्रह भेद सक्षयसें कहा फिर विशेष देखलाते है ॥ ५५ ॥

॥ जिणसिद्धाअरिहता अजिणसिद्धायपुंडरियापमुहा
गणहारितित्थसिद्धा अतित्थसिद्धायमरुदेवो ॥ ५६ ॥

॥ (जिण सिद्धा) ती कर होके मोक्ष गये वह तीर्थंकरसिद्ध (अरिहंता) ऋषभादि अरिहंतसिद्ध १ (अजिण सिद्धायपुंडरियापमुहा) अजिनसिद्ध सामान्य केवली पुंडरिक गणधर आदि २ (गण हारिति थ सिद्धा) गण र गौतमादि तीर्थ सिद्ध ३ (अतित्थसिद्धाय-मरुदेवो) अतीर्थसिद्ध ऋषभ मा वी ४ ॥ ५६ ॥ ॥६७॥

॥ गिहिलिंगसिद्धभरहो वलकलचीरीयअन्नलिंगम्मि
साहुसलिंगसिद्धा थोसिद्धाचदणापमुहा ॥ ५७ ॥

॥ (गिहिलिंगसिद्ध) गृहीलिंगे सिद्ध हुये (भरहो) वह भरतादि ५ (वलकलचीरीय) वल्कल चीरीयादि तापशके वेषमें जो सिद्ध हुये (अन्नलिंगम्मि) वह अन्यलिंगे सिद्ध जानना ६ (साहुसलिंगसिद्धा) साधुके वेषमें जो सिद्ध हुए वह स्वलिंगसिद्ध ७ (थीसिद्धाचंदणापमुहा) स्त्रीके लिंगमे जो सिद्ध हुए वह चंदन बालादि लेकर ८ ॥ ५७ ॥

॥ पुंसिद्धागोयमाई गंगेयाईनपुंसयासिद्धा
पत्तेयसयंबुद्धा भणियाकरकंडुकविलाई ॥ ५८ ॥

॥ (पुंसिद्धागोयमाई) पुरुष लिंगे सिद्ध गौतमादि ९ (गंगेयाईनपुंसयासिद्धा) गंगेयादि जो सिद्ध हुए वह नपुंसकलिंगे सिद्धा १० (पत्तेयसयंबुद्धा) प्रत्तेक बुद्धसिद्ध और स्वयं बुद्ध अनुक्रमसें (भणिया) कहा (करकंडु) करकंडु राजा ११ (कविलाई) और कपिल आदि कहे १२ ॥ ५८ ॥

॥ तहबुद्धबोहिगुरुबोहिया इगसमयएगसिद्धाय
एगसमएविअणेगा सिद्धातेणेगासिद्धाय ॥ ५९ ॥

॥ (**तह**) फिर तेसें ही (**बुद्धबोहिगुरुबोहिया**) बुद्धबोधित सिद्ध हुए वह गुरु उवदेशसें १३ (**एगसमयएगसिद्धाय**) एक समयमें एकही सिद्ध होए (**एगसमणविअ-णेगा**) एक सिद्ध महावीर आदि १४ ओर एक समयमें अनेक (**सिद्धातेणेगसिद्धाय**) सिद्ध होये वह रुषभादि १५ ॥ ५९ ॥

॥ जइआइहोइपुच्छा जिणाणमग्गमिउत्तरतइया
इकसनिग्गोयस्स अणतभागोयसिद्धिगओ ॥ ६० ॥

॥ (**जइआइहोइपुच्छा**) जिस जिस समयपर भगवान्को पुछनेमें आवै (**जिणा-णमग्गमिउत्तरतइया**) उस उस समयपर जिनेस्वर महाराजके मार्गमें यह ही उत्तर मिलते हे कि (**इकसनिग्गोयस्सअणतभागोय**) एक निगोदक अनतमे भागे (**सिद्धिगओ**) सिद्धोमें गये हें इति श्रीमद् महायोगीन्द्र श्री आनन्दघन महाराजके चरणोंपाशक ॥

॥ अध्यात्म जितमुनिविरचित हिन्दीअनुवादसहित नवतत्त्व प्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ ॐ आनन्दघन गुरुभ्यो नमः ॥

अथ श्री दंडकप्रकरण मूलसहितं हिन्दी अनुवाद प्रारम्भ ॥

॥ नमिउंचउवीसजिणे तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ
दंडगपएहिंतेच्चिय थोसामिसुणेहभोभव्वा ॥ १ ॥

(नमिउंचउवीसजिणे) चोवीशे जिनस्वोरोको नमस्कारकरके (तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ) उसके सूत्रके विचारसे लेशमात्र कहनेसे (दंडगपएहिंतेच्चिय) दंडगके पदेकरके (थोसामिसुणेहभोभव्वा) में कहताहुं सो हे भव्य तुम सुनो ॥ १ ॥

॥ निचेकी गाथासे चौवीश दंडकके नाम देखलाते है ॥

॥ नेरइआअसुराई पुढवाईबेइंदियादओचेव
गब्भयतिरियमणुस्सा वंतरजोइसियवेमाणी ॥ २ ॥

॥ (**नेरइआ**) सात नारकको १ (**असुराई**) असुरादि दश भुवनपतिका १० (**पुढवाई**) पृथ्वीकायादि पांच स्थावरके ५ (**बेइंदियादओंचेव**) दो इंद्रियादि विकलेंद्रिके ३ (**गब्भयतिरिय**) गर्भजतिर्यंचका १ (**मणुस्सा**) गर्भज मनुष्यका १ (**वंतर**) व्यंतरका १ (**जोइसिय**) ज्योतिषि देवोका १ (**वेमाणि**) और वैमानिक देवोंका १ ऐसे सब मिलकर चोवीश दंडक समझ लेना ॥ २ ॥

॥ अब चोवीश दंडकके चोवीस द्वार कहते है ॥

॥ संखित्तयरीउइमा सरीरमोगाहणायसंघयणा

सन्नासंठाणकसाय लेसइंदीयदुसमुघाया ॥ ३ ॥

॥ (**संखित्तयरीउइमा**) यह संघणी संक्षेप मात्र है (**सरीर**) शरीरद्वार १ (**ओगाहणाय**) अवगाहनाद्वार २ (**संघयणा**) संघयणद्वार ३ (**सन्ना**) संज्ञाद्वार ४ (**संठाण**) संस्थानद्वार ५ (**कसाय**) कषायद्वार ६ (**लेस**) लेश्याद्वार ७ (**इंदिय**) इंद्रियद्वार ८ (**दुसमुग्घाया**) दो प्रकारे समुद्घातद्वार ९ ॥ ३ ॥

॥ दिठीदंसणनाणे जोगुवओगोववायचवणठिई
पज्जत्तिकिमाहारे सन्निगइआगईवेए ॥ ४ ॥

॥ (**दिठी**) दृष्टिद्वार १० (**दंसण**) दर्शनद्वार ११ (**नाणे**) ज्ञानद्वार १२ अज्ञानद्वार १३ (**जोगु**) योगद्वार १४ (**वओगो**) उपयोगद्वार १५ (**ववाय**) उपपातद्वार १६ (**चवण**) च्यवनद्वार १७ (**ठिइ**) स्थितिद्वार १८ (**पज्जत्ति**) पर्याप्तिद्वार १९ (**किमाहारे**) किमाहारद्वार २० (**सन्नि**) संज्ञाद्वार २१ (**गई**) गतिद्वार २२ (**आगई**) अगतिद्वार २३ (**वेद**) वेदद्वार २४ इति चौवीश ॥ ४ ॥

॥ अब इस चोवीश दंडकोके विषे कुणशा कुणशा द्वार आवेगे वह देखलाते है ॥

प्रथम शरीरद्वार

॥ चउगभ्यतिरियवाउसु मणुआणंपंचसेसतिसरीरा
थावरचउगेदुहओ अंगुलअसंखभागतणू ॥ ५ ॥

॥ (चउगब्भतिरियवाउसु) गर्भजतिर्यचको और वाउकायको औदारिक वैक्रिय तेजस और कर्मण ऐसे चार शरीर होते है (मणुआणपंच) ओर मनुष्यको पाचोही शरीर होते है (सेसतिसरीरा) बाकीके एकादश दडकोके विषे तिन तिन शरीर है इति १ शरीरद्वार ॥ ५ ॥

॥ अब दुसरा अवगाहनाद्वार कहते हे ॥

(थावरचउगेदुहओ) धान्यतिजसके चार स्थावरको जघन्य और उत्कृष्ट ऐसे दो प्रकारे (अगुलअसखभागतणु) अगुलके असख्यातमें भागे शरीरकी अवगाहना होति है ॥ ५ ॥

॥ सव्वेसिपिजहन्ना साहावियअगुलस्सअसखसो
उक्कोसपणसयघणू नेरइयासत्तहत्थसुरा ॥ ६ ॥

॥ (सव्वेसिपिजहन्ना) (चार स्थावरवरजके) सब दडकोके विषे जघन्यसे (साहावियअगुलस्सअसखसो) स्वाभाविक अगुलके असख्यातमे भागे शरीर होते है ॥७३॥
(उक्कोसपणसयघणू) और उत्कृष्टी अवगाहना पाचसें धनुष्यकी (नेरइया) नारकीके जीवोकी है (सत्तहत्थसुरा) और देवोंका उत्कृष्टा शरीरमान सात हाथका होता है ॥ ६ ॥

॥ गब्भतिरिसहस्सजोयण वणस्सईअहियजोयणसहस्सं
नरतेइंदितिगाऊ बेइंदियजोयणेबार ॥ ७ ॥

॥ (गब्भतिरिसहस्सजोयण) गर्भजतिर्यंचका शरीर एक हजार जोजनका है (वणस्सईअहियजोयणसहस्सं) और वनस्पतिकायका शरीर एक हजार जोजनसे कुछ अधिक होते है (नरतेइंदितिगाऊ) मनुष्य और तेइंद्रिका शरीर तिन गाउका होते है (बेइंदियजोयणेबार) और दोइंद्रिका शरीर बारह जोजनका है ॥ ७ ॥

॥ जोयणमेगंचउरिंदि देहमुच्चत्तणंसुएभणियं
वेउव्वियदेहंपुण अंगुलसंखंससमारंभे ॥ ८ ॥

॥ (जोयणमेगंचउरिंदि) एक जोजन चौरांद्रिका (देहमुच्चत्तणंसुएभणियं) शरीरका उंचपणा सूत्रमे कहा है (वेउव्वियदेहंपुण) फेर वैक्रिय शरीरका अनुमान कहते है (अंगुलसंखंससमारंभे) आरंभतीवेर सदैवअंगुलके संख्यातमे भागे होते है ॥ ८ ॥

॥ देवनरअहियलक्खं तिरियाणंनवयजोयणसयाइं
दुगुणंतुनारयाणं भणियंवेउव्वियसरीरं ॥ ९ ॥

॥ (**देवनरअहियलक्ख**) देवताका वैक्रिय शरीर एक लाख जोजनका होता है और मनुष्यका वैक्रिय शरीर एक लाख जोजनमें कुछ अधिक होता है (**तिरियाणनवयजोयणसयाइ**) और तिर्यंचका वैक्रिय शरीर नवसें जोजनका (**दुगुणतुनारयाण**) और नारकका शरीर मूलसें दुना होते है (**भणियवेउब्बियशरीर**) इसप्रकारे वैक्रिय शरीरका प्रमाण कहा ॥ ९ ॥

॥ अब एक वैक्रिय शरीर कितनो काल रहे वह देखलाते है ॥

॥ **अतमुहुत्तनिरये मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु**
देवसुअद्धमासो उक्कोसविउव्वणाकालो ॥ १० ॥

॥ (**अतमुहुत्तनिरये**) नारकके वैक्रिय शरीरका काल अतर्मुहूर्त्तका होते है फेर दुसरा करणा पडता है (**मुहूत्तचत्तारितिरियमणुएसु**) मनुष्य और तिर्यंचके वैक्रिय शरीरका काल मान चार मुहूर्त्तका है (**देवेसुअद्धमासो**) और देवोके वैक्रिय शरीरका काल एक पक्षदिनका (**उक्कोसवि-उव्वणाकालो**) इस प्रकारसें वैक्रिय शरीरका उत्कृष्टकालमान कहा है ॥ इति शरीर अवगाहना द्वार २ ॥ १० ॥

॥ अब तीसरा संघयणद्वार कहते है ॥

॥ थावरसुरनेरइया असंघयणायविगलछेवट्ठा
संघयणछक्कंगब्भय नरतिरिएसुमुणेयव्वं ॥ ११ ॥

॥ (**थावरसुरनेरइया**) पांच स्थावर तेरे देवता और एक नारक ऐसे सब मिलके उगणीसदंडकोके विषे (**असंघयणाय**) संघयण नही होते है (**विगलछेवट्ठा**) और तीन विकलेंद्रिको एक छेवठा होते है (**संघयणछक्कंगब्भय**) छे संघयण गर्भजको (**नरतिरिएसुविमुणेयव्वं**) मनुष्य और तिर्यंचको जान लेना ॥ इति चौविस दंडके संघयण द्वार ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अब चोथा संज्ञाद्वार कहते है ॥

॥ सव्वेसिंचउदहवा सन्नासव्वेसुरायचउरंसा
नरतिरियछसंठणा हुंडाविगलिंदिनेरइया ॥ १२ ॥

॥ (**सव्वेसिंचउदहवा**) सब दंडकोके विषे चार दश तथा सोले (**सन्ना**) संज्ञा होते है ॥ इति चोवीश दंडके चतुर्थ संज्ञाद्वार ॥

॥ अब पंचमा संस्थानद्वार कहते है ॥

(सव्वेसुरायचउरसा) सब देवोका समचोरस सस्थान है **(नरतिरियछसठाणा)** मनुष्य और तिर्यचको छेही सस्थान होते है **(हुडाविगलिदिनेरईया)** विकलेंद्रि और नारकको एक हुडक ही सस्थान होते है ॥ १२ ॥

॥ नाणाविहधयसूई बुब्बुहवणवाउतेउअपकाया
पुढवीमसूरचदा–कारासठाणओभणिया ॥ १३ ॥

॥ **(नाणाविह)** नाना प्रकारका **(धय)** ध्वजाके आकारे सस्थान **(सूई)** सुईके आकारे **(बुब्बुह)** जलके बुद्बुदाके आकारे, **(वणवाउतेउअपकाया)** अनुक्रमसें वन स्पतिकाय वाउकाय तेउकाय और अपकायका है **(पुढवीमसूरचदाकारा)** और पृथ्वीकायका मसूरकीदाल अथवा अर्धचद्रके आकारे **(सठाणओभणिया)** इस प्रकारसे चोवीश दडके पचम सस्थानद्वार कहा ॥ १३ ॥

॥ अब छठा कषायद्वार कहते है ॥

॥ सवेविचउकसाया लेसछक्कगब्भतिरियमणुएसु
नारयतेऊवाऊ विगलावेमाणियतिलेसा ॥ १४ ॥

॥ (**सवेविचउकसाया**) सर्व दंडकोके विषे चारोही कषाय होते है इति चोवीश दंडके छेठा कषायद्वार ॥

॥ अब सप्तम लेशाद्वार कहते है ॥

(**लेस्सछक्कंगप्भतिरियमणुएसु**) छेहीलेसा गर्भज तिर्यंच और मनुष्यकोहोते है (**नारयतेऊवाऊ**) और नारक तेउकाय वाउकाय (**विगला**) और तिनविकलेंद्रि एसे छे दंडकोके विषे प्रथमकी तीन लेस्या होति है (**वेमाणियतिलेस्सा**) और वैमाणिक देवोंको अन्तकी तीन लेस्या होति है ॥१४॥

॥ जोइसियतेउलेसा सेसासव्वेविहुंतिचउलेसा
इंदियदारंसुगमं मणुआणंसत्तसमुग्घाया ॥ १५ ॥

॥ (**जोइसियतेउलेसा**) और ज्योतिषीको एक तेजोलेस्याही होति है (**सेसासवेविहुंतिचउलेसा**) और शेष सब दंडकोके विषे कृश्नादि चार लेस्या है इति चोवीस दंडके लेस्याद्वार ७ (**इंदियदारंसुगमं**) और इन्द्रियद्वार तो सुगम है ८ ॥

॥ अब समुद्घातद्वार कहते है ॥ ९

(**मणुआणंसत्तसमुग्घाया**) मनुष्यको सातोही समुद्घात होति है ॥ १५ ॥

॥ अब एक गाथासें सातोही समुद्घातका नाम देखलाते है ॥

॥ वेयणकसायमरणे वेउव्वियतेयएयआहारे
केवलियसमुग्घाया सत्तइमेहुतिसन्नीण ॥ १६ ॥

॥ (**वेयण**) वदना (**कसाय**) कषाय (**मरणे**) और मरण (**वेउव्विय**) वैक्रिय (**तेयण्य**) तेजस और (**आहारे**) आहारक (**केवलियसमुग्घाय**) केवली समुद्घात (**सत्तइमेहुतिसन्नीण**) इस प्रकारसें सातोही समुद्घात सन्नि-पचन्द्री मनुष्यको होति है ॥१६॥

॥ एगिंदियाणकेवलि तेउआहारगविणाउचत्तारि
तेवेउव्वियवज्जा विगलासन्नीणतेचेव ॥ १७ ॥

॥ (**एगिदियाणकेवलि**) एकेन्द्रीको केवली (**तेउआहारगविणाउचत्तारि**) तथा तेजस और आहारक इस तिनुको वरजके बाकीकी चार समुद्घात एकेद्रिको होति हे (**तेवेउवि-यवज्जा**) वह तिन और वेक्रिय यह चार वरजके (**विगलासन्नीण**) तीन समुद्घात विकलेद्रि ओर असन्नीको होति हे (**तेचेव**) निश्चे करके ॥ १७ ॥ ॥७९॥

॥ पणगब्भतिरिसुरेसु नारयवाऊसुचउरतियसेसे
विगलदुदिट्ठीथावर मिच्छत्तिसेसतियदिट्ठी ॥ १८ ॥

॥ (पणगब्भतिरिसुरेसु) परन्तु गर्भज तिर्यंच और तेरह देवोंको प्रथमकी पांच समुद्घात होति है (नारयवाऊसु) नारक और वाउकायके विषे प्रथमकी (चउर) चार समुद्घात है (तियसेसे) और शेषके सात दंडकोके विषे प्रथमकी तीन समुद्घात होते है ॥ इति चोवीस दंडके नवमा समुद्घात द्वार ॥

॥ १० अब दृष्टिद्वार कहते है ॥

(विगलदुदिट्ठी) विकलेन्द्रिको दो दृष्टि होती है एक सम्यक् और दुसरी मिथ्यादृष्टि ऐसे दो (थावर) पांच स्थावरको (मिच्छत्ति) एक मिथ्यादृष्टिही होति है (सेसतियदिट्ठी) शेष रहे हुये जो सोलह दंडक उसके विषे सम्यक् मिश्र और मिथ्यात्व यह तीन दृष्टि होति है ॥ इति चौविश दंडके दशमा दृष्टि द्वार ॥

॥ अब दर्शनद्वार कहते है ॥

॥ थावराबितिसुअचरकु चउरिंदिसुतद्दुगंसुएभणियं
मणुआचउदंसाणिणो सेसेसुतिगंतिगंभणियं ॥ १९ ॥

॥ **(थावर)** पाच स्थावरको **(बितिसुअचरकु)** तथा दोइन्द्रि और तेइन्द्रिको एक अच खुदर्शनही होते है(**चउरिंदिसु**) चउरिंद्रिको (**तदुगसुणभणिय**) चक्षु तथा अचक्षु ऐसे दो दर्शन सूत्रमे कहा है**(मणुआचउदसणिणो)** और मनुष्यके विषे तो चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन अवधिदर्शन और केवल दर्शन ऐसे चारोहीहोते हे **(सेसेसुतिगतिगभणिय)** बाकीके सब दडकोके विषे केवल वर्जके तिनतिन दर्शन कहा है ॥ इति चोवीश दडके ११–१२–१३ दर्शनद्वार ॥ १९ ॥

॥ अब ज्ञान अज्ञानद्वार कहते हे ॥

॥ अन्नाणनाणतियतिय सुरतिरिनिरएथिरेअनाणदुग
नाणान्नाणदुविगले मणुएपणनाणतिअनाणा ॥ २० ॥

॥ (**अन्नाणनाणतियतिय**) तीन अज्ञान और तीन ज्ञान (**सुरतिरिनिरए**) देवताको तथा तिर्यन और नारकको होते हे (**थिरेअनाणदुग**) और स्थावरको मति तथा श्रुत ऐसे दो अज्ञान होते है **(नाणान्नाणदुविगले)** दो ज्ञान तथा दो अज्ञान विकलेंद्रिको होते है (**मणुएपणनाणतिअनाणा**) और मनुष्यको तो पाच ज्ञान और तीन अज्ञान एसे आठोही होते हे ॥ इति चौवीश दडक ज्ञान अज्ञानद्वार १३ ॥ २० ॥

॥ अब योगद्वार कहते हैं ॥

॥ इक्कारससुरनिरए तिरिएसुतेरपनरमणुएसु
विगलेचउपणवाए जोगतियंथावरेहोई ॥ २१ ॥

॥ (**इक्कारससुरनिरए**) देवता और नारकको इग्यारे योग होते हे (**तिरिएसुतेर**) तिर्यंचको तेरह (**पनरमणुएसु**) और मनुष्यको पन्द्रेही योग होते है (**विगलेचउ**) विकलेंद्रिको चार (**पणवाए**) वाउकायको पांच (**जोगतियंथावरेहोइ**) और स्थावरको तीन योग होते है ॥ इति चोवीश दंडके योगद्वार १४ ॥ २१ ॥

॥ अब उपयोगद्वार कहते है ॥

॥ उवओगामणुएसु बारसनवनिरयतिरियदेवेसु
विगलदुगेपणछक्कं चउरिंदिसुथावरेतियगं ॥ २२ ॥

॥ (**उवओगामणुएसु**) मनुष्यके विषे उपयोग (**बारस**) बारहही होते है (**नवनिरयतिरियदेवेसु**) नारक तिर्यंच और देवोंको नव उपयोग होते हैं (**विगलदुगेपण**) दो विकलें-

द्रिको पाच (छक्क) छे (चउरिंदिसु) चौरेंद्रिको (थावरेतियग) और स्थावरको तीन उपयोग होते है ॥ इति चोवीश दृडके उपयोगद्वार १९ ॥ २१ ॥

॥ अत्र उत्पति और चवनद्वार कहते हे ॥

॥ सखमसखासमए गप्भयतिरिविगलनारयसुराय
मणुआनियमासखा वणऽणताथावरअसखा ॥ २३ ॥

॥ (**सखमसखासमए**) एक समयके विषे सख्याता और असख्याता (**गप्भयतिरि**) गर्भजतिर्यच (**विगलनारयसुराय**) विकलेंद्रि नारक और देवता उत्पन्न होते है (**मणुआनियमासखा**) मनुष्योनिश्चयके सख्याता उत्पन्न होते है (**वणऽणता**) वनस्पतिकाय अनन्ता (**थावरअसखा**) और स्थावर असख्याता उत्पन्न होते है ॥ २३ ॥

॥ असन्निनरअसखा जहउववाएतहेवचवणेवि
बावीससगतिदसवास सहस्सउक्किट्ठपुढवाई ॥ २४ ॥ ॥८३॥

॥ (**असन्निनरअसखा**) असन्नी मनुष्यो असख्याता उत्पन्न होते है (**जहउववाए**)

जैसेही उत्पन्न होते है **(तहेवच्चवणेवि)** तैसेही चवते है ॥ इति चौवीश दंडके उपपातद्वार तथा चवणद्वार

॥ अब (स्थिति) आयुद्वार कहते है ॥

(बावीससगतिदसवाससहस्स) बावीस हजार सात हजार तिन हजार और दश हजार वर्षको आयु **(उक्किट्ठपुढवाई)** उत्कृष्टो अनुक्रमे पृथ्वीकायादि इस लिये पृथ्वीकाय अप्काय वाउकाय और वनस्पतिकायका जान लेना ॥ २४ ॥

॥ तिदिणग्गितिपल्लाऊ नरतिरिसुरनिरयसागरतितीसा
वंतरपल्लंजोइस वरिसलख्खाहिअंपलिअं ॥ २५ ॥

॥ **(तिदिणग्गि)** तिन अहोरात्रिका आयु अग्निकायका **(तिपल्लाऊ)** तीन पल्योपका आयु **(नरतिरि)** मनुष्य और तिर्यंचका **(सुरनिरयसागरतितीसा)** देवता और नारकका उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरोपमका होते है **(वंतरपल्लं)** व्यंतरका आयु एक पल्योपमका **(जोइस)** और ज्योतिपी देवोका आयु **(वरिसलख्खाहिअंपलिअं)** एकलाख वर्ष अधिक एक पल्योपमका होते है ॥ २५ ॥

॥ असुराणअहियअयर देसूणदुपल्लयनवनिकाए
बारसवासुणपणदिण छम्मासउकिट्ठविगलाऊ ॥ २६ ॥

॥ **(असुराणअहियअयर)** असुरकुमारनिकायका आयु एक सागरोपमें कुछ अधिक होते है **(देसूणदुपल्लयनवनिकाए)** शेषनवनिकायका आयु देसेउणा दो पल्योपमका होते है **(बारसवासुणपणदिण)** बारह वर्ष और गुण पचास दिन **(छम्मासउकिट्ठविगलाऊ)** छे मासका उत्कृष्ट आयु अनुक्रमसें विकलेंद्रिका समज लेना ॥ २६ ॥

॥ पुढवाइदसपयाण अतमुहुत्तजहन्नआउठिई
दससहसवरिसठिइआ भवणाहिवनिरयवतरिया ॥ २७ ॥

॥ **(पुढवाइदसपयाण)** पृथ्वीकायादि दशपदकी इसलिये पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रि तिर्यन्च और मनुष्यकी **(अतमुहुत्तजहन्नआउठिई)** जघन्यसें आयुकी स्थिति अतर्मूहुर्त्तकी कही हे **(दससहसवरिसठिइआ)** दश हजार वर्षकी आयुस्थिति जघन्यसें **(भवणाहिवनिरयवतरिया)** दश भुवनपति नारक और व्यतरीकको कही है ॥ २७ ॥

॥ वेमाणियजोइसिया पल्लतयठंसआउआहुंति
सुरनरतिरिनिरएसु छपज्जत्तीथावरेचउगं ॥ २८ ॥

॥ (**वेमाणियजोइसिया**) वैमानिक और ज्योतिषीका आयु जघन्यसें (**पल्लतयठंसआउआहुंति**) एक पल्योपमके आठमे भागे होते है १८ ॥ इति चौवीश दंडके उत्कृष्ट और जघन्यसे स्थितिद्वार कहा ॥

॥ अब पर्याप्तिद्वार कहते है ॥

(**सुरनरतिरिनिरएसु**) देवता मनुष्य तिर्यच और नारकके विषे (**छपज्जत्ती**) छेही पर्याप्ति होति है (**थावरेचउगं**) और पांच स्थावरके विषे प्रथमकी चार पर्याप्ति है ॥ २८ ॥

॥ विगलेपंचपज्जत्ती छद्दिसिआहारहोइसवेसिं
पणगाइपएभयणा अहसन्नितियंभणिस्सामि ॥ २९ ॥

॥ (**विगलेपंचपज्जत्ती**) तीनो विकलेंद्रिके विषे प्रथमकी पांच पर्याप्ति होति है १९ ॥ इति चौवीश दंडके पर्याप्तिद्वार ॥

॥ अत्र किमाहाराद्वार कहते है ॥

(छद्दिसिआहारहोइसवेसिं) सव जीवोंके आश्रेर छेही दिशीका आहार जान लेना **(पणगाइप-एभयणा)** इतना विशेषकि पृथ्वी मायादि पाचोही स्थावर पदके विषे भजना हे इस लिए छए-दिशीका आहार होव भी सही और न्ही भी होवे २० ॥ ईति चौवीश दडके छेदिशी आहारद्वार ॥ **(अहसन्नितियंभणिस्सामि)** अब तीन सज्ञाद्वार कहता हु ॥ ॥ २९ ॥

॥ चउविहसुरतिरिएसु निरएसुअदीहकालिगीसन्ना
विगलेहेउवएसा सन्नारहियाथिरासवे ॥ ३० ॥

॥ **(चउविहसुरतिरिएसु)** चार प्रकारके देवोके विषे तथा तिर्यंच **(निरएसुअदी-हकालिगीसन्ना)** और नारकके विषे दीर्घ कालकी सज्ञा होति है **(विगलेहेउवएसा)** और विकलेंद्रिके विषे हितोपदेशकीसज्ञा होति हे **(सन्नारहियाथिरासवे)** और स्थावरो सवही सज्ञा रहित होते हे ॥ ३० ॥ ॥८७॥

॥ मणुआणदीहकालिय दिठ्ठीवाओवएसिआकेवि
पज्झपणतिरिमणुअच्चिय चउविहदेवेसुगच्छंति ॥ ३१ ॥

॥ **(मणुआणदीहकालिय)** मनुष्यको दीर्घकालकी संज्ञा होति है **(दिठीवाओवए-सिआकेवि)** कितनेक मनुष्यको दृष्टिवादोपदेशकी २१ संज्ञा भी होती है ॥ इति चोवीश दंडके तिन प्रकारकी संज्ञाद्वार ॥

॥ अव गति आगति दो द्वार कहते है ॥

(पज्जपणतिरिमणुअच्चिय) पर्याप्ता पंचेद्रितिर्यंच और मनुप्य निश्चय करके **(चउविहदेवे-सुगच्छंति)** चार प्रकारके देवोंके विषे जाते है ॥ ३१ ॥

॥ संखाउपज्जपणिंदि तिरियनरेसुतहेवपज्जत्ते

भूदगपत्तेयवणे एएसुच्चियसुरागमणं ॥ ३२ ॥

॥ **(संखाउपज्जपणिंदि)** संख्याते आयुवाले पर्याप्तापंचेन्द्री **(तिरियनरेसु-तहेवपज्जत्ते)** तेसेही पर्याप्ता तिर्यंच और मनुष्यके विषे **(भूदगपत्तेयवणे)** पृथ्वीकाय अपकाय और प्रत्येक वनस्पतिकाय **(एएसुच्चिय)** इस पांचोके विषे निश्चय करके **(सुरा-गमणं)** देवताका आना इस लिये उत्पन्न होना ॥ ३२ ॥

॥ पज्जत्तसखगब्भय तिरियनरानिरयसत्तगेजंति
निरउवट्टाएएसु उववज्जंतिनसेसेसु ॥ ३३ ॥

॥ (पज्जत्तसखगब्भय) सख्याता वर्षके आयुवाले पर्याप्ते गर्भज (तिरियनरा) तिर्यंच और मनुष्य (निरयसत्तगेजंति) यह दोनोही सातोही नारकके विषे जाते है (निरउ-वट्टा) इस सातोही नारकसे निकले हुवे जीवो (एएसु) यह दो दडक विन (उववज्जतिन-सेसेसु) शेष दडकोके विषे उत्पन्न नही होते है ॥ ३३ ॥

॥ पुढवीआउवणस्सइ मज्झेनारयविवज्जियाजीवा
सव्वेउववज्जंति नियनियकम्माणुमाणेण ॥ ३४ ॥

॥ (पुढवीआउवणस्सइ) पृथ्वीकाय अप्काय और वनस्पतिकाय (मज्झे) विषे (नारयविवज्जियाजीवा) नारकके जीवोको वर्जके (सव्वेउववज्जंति) और सर्व जीवो उत्पन्न होते हे (नियनियकम्माणुमाणेण) अपने अपने कर्मानुसारे ॥ ३४ ॥

॥ पुढवाइदसपएसु, पुढवीआउवणस्सईजंति ॥
पुढवाइदसपएहिय, तेउवाउसुउववाओ ॥ ३५ ॥

॥ (पुढवाइदसपएसु) पृथ्वीकायादि दश पदके विषे (पुढवीआउवणस्सई-जंति) पृथ्वीकाय अपूकाय और वनस्पतिकायके जीवो सब होते है (पुढवाइदसपएहिय) और पृथ्वी कायादि दश पदमेंसे निकले हुये जीवों (तेउवाउसुउववाओ) तेउकाय और वाउकायके विषे उत्पन्न होते है ॥ ३५ ॥

॥ तेउवाउगमणं, पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे
पुढवाइठाणदसगं, विगलाइंतियतहिंजंति ॥ ३६ ॥

॥ (तेउवाउगमणं) तेउकाय और वाउकायकाजाना (पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे) पृथ्वीकायादि नवपदके विषे होते है (पुढवाइठाणदसगं) पृथ्वीकायादि दश स्थानकके जीवों (विगलाइंतियतहिंजंति) तीन विकलेन्द्रिमें उत्पन्न होते है ॥ ३६ ॥

॥ गमणागमणंगप्भय, तिरिआणंसयलजीवठाणेसु
सव्वत्थजंतिमणुआ, तेउवाहुहिंनोजंति ॥ ३७ ॥

॥ (गमणागमणंगप्भयतिरिआणंसयलजीवठाणेसु) गर्भजतिर्यंचका जाना आना

सब दंडकोंके विषे होता है (**सव्वत्थजंतिमणुआ**) और मनुष्योंकाभी जाना सब दंडको के विषे होता है (**तेउवाऊहिंनोजंति**) परंतु तेउकाय और वाउकायके विषे नहीं जाते ॥ ३७ ॥

॥ वेयतियतिरिनरेसु, इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु
थिरविगलनारएसु, नपुसवेओहवइएगो ॥ ३८ ॥

॥ (**वेयतियतिरिनरेसु**) तीन वेद तिर्यंच और मनुष्यको होते हे (**इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु**) और चार प्रकारके देवोंके विषे स्त्री वेद तथा पुरुष वेद होते हे (**थिरविगलनारएसु**) और पांच स्थावर विकलेंद्रि और नारकके विषे (**नपुसवेओहवइएगो**) एक नपुंसक वेदही होते हे ॥ ३८ ॥

॥ पज्जमणुवायरग्गी, वेमाणियभवणनिरयवंतरिया
जोइसचउपणतिरिया, वेइंदितिइंदिभूआउ ॥ ३९ ॥ ॥९१॥

॥ अब अल्प बहुत्व द्वार कहते हे ॥

॥ (**पज्जमणुवायरग्गी**) पर्याप्ता मनुष्य और बादर अग्निकाय (**वेमाणियभव-**

णनिरयवंतरिया) वैमानिक भुवनपति नारक और व्यंतर (जोइसचउपणतिरिया) ज्योतिषि चौरिन्द्रि और पंचेन्द्रि तिर्यच (बेइंदितिइंदिभूआउ) तथा दोइन्द्रि तेइन्द्रि पृथ्वीकाय और अप्काय ॥ ३९ ॥

॥ वाऊवणस्सईच्चिय, अहियाअहियाकमेणमेहुंति
सव्वेविइमेभावा, जिणामएणंतसोपत्ता ॥ ४० ॥

॥ (वाऊवणस्सईच्चिय) वाउकाय और वनस्पतिकाय यह सब निश्चय करके (अहियाअहियाकमेणमेहुंति) अनुक्रमे एक एकसे अधिक होते है (सव्वेविइमेभावा) यह सबही भी भावो (जिणामएणंतसोपत्ता) हे जिनेश्वर देव मैंने अनंती वेर प्राप्त किया है ॥४०॥

॥ संपइतुह्मभत्तस्स, दंडगपयभमणभग्गहिययस्स
दंडतियविरयसुलहं, लहुममदिंतुमुरकपयं ॥ ४१ ॥

॥ (संपइतुह्मभत्तस्सदंडगपयभमणभग्गहिययस्स) अब चौवीश दंडकोके स्थानकके विषे भमनेसे निवृत्त हुवा है मन जिसका एसा तुमारा भक्त एसा मुझको (दंडतियवि-

रयसुलह) मन वच और काया यह तीन दडकका विरामसे सुर्लभ एसो **(लहुममदितुमुरकपय)** मोक्ष पद जल्दी देदो ॥ ४१ ॥

॥ सिरिजिणहंसमुणीसर, रज्जेसिरिधवलचदसीसेण
गजसारेणलिहिया, एसाविन्नत्तीअप्पहिया ॥ ४२ ॥

॥ **(सिरिजिणहसमुणीसर)** श्री जिनहसमुनिके **(रज्जेसिरिधवलचदसी-सेण)** राज्यके समय श्री धवलचद्रमुनीके शिप्य **(गजसारेणलिहिया)** गजसार मुनिने लिखा है **(एसाविन्नत्तीअप्पहिया)** यह विज्ञप्ति अपनी आत्माके अर्थे ॥ ४२ ॥

॥ इति श्रीमन्महायोगीन्द्र आनदघन महाराज चरणोपासक जित विरचित हिन्दी अनुवाद सहितं दडक प्रकरण समासम् ॥

दंडक

॥ अथ अनुभव पञ्चविंशति लिख्यते ॥

[illegible]वाणी भगवति भारती, [illegible] जिनराज [illegible]
आतम अनुभव कारणे, कहुं [illegible] ॥ १ ॥
यह नर भव यह थिर है, यह [illegible] परिवार [illegible]
[illegible] बुद्धि [illegible], [illegible] है [illegible] ॥ २ ॥
पर [illegible] [illegible], [illegible] ॥
अनुभव आतम कारणे, [illegible] ॥ ३ ॥
देव जीव अज्ञानमें, [illegible] माने नेह ॥
[illegible] है संसारमें, [illegible] न पावो [illegible] ॥ ५ ॥
देव जीव आतम नहीं, [illegible] पदको [illegible] ॥
देव जीव समझे नहीं, कैसे लहै शुभ [illegible] ॥ ६ ॥

प्रकरण